द्वितीय अंक | त्रैमासिक शैक्षणिक पत्रिका | अप्रैल से जून अंक

निःशुल्क

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार की प्रस्तुति

नवाचार

गर्मी की छुट्टियों में करें डल झील की यात्रा

विज्ञान

बिहार के बेस्ट स्कूलों की कहानी

बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में कैसे रखें व्यस्त

लघु कथाएं

सुनीता विलियम्स को जानें

ई पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन करें

"प्रज्ञानिका" त्रैमासिक पत्रिका है। जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार की तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। बिहार के शिक्षकों द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।इसमें शिक्षकों के विभिन्न शैक्षणिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका प्रकाशन अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।

प्रज्ञानिका 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।

पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसके साथ ही प्रकाशित हर सामग्री की ज़िम्मेदारी लेखक के स्वयं की है।

पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रज्ञानिका

सम्पादक
कुमारी निधि
न्यू प्राथमिक विद्यालय सुहागी
किशनगंज

पाठ-शोधक
डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

तकनीकी सहयोग, डिज़ाइन एवं साज-सज्जा
शिवेंद्र प्रकाश सुमन
इंजीनियर, मुजफ्फरपुर, बिहार

फाउंडर -सह -प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक
शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रज्ञानिका टीम

विशेष सहयोग

अनुपमा प्रियदर्शिनी
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन
रघुनाथपुर, सिवान

नवाचार

रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया
फारबिसगंज, अररिया

पोस्टर निर्माण

मधु प्रिया
मध्य विद्यालय रामपुर बी.एम.सी
फारबिसगंज, अररिया

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा
भभुआ, कैमूर

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय मलहरिया
समेली, कटिहार

शिक्षक समाचार

अभिषेक कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा
सरैया, मुजफ्फरपुर

विद्यालय एवं शिक्षक गाथा

केशव कुमार
बुनियादी विद्यालय बखरी
मुरौल, मुजफ्फरपुर

सुर्खियाँ

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

तस्वीरें बोलतीं हैं

पुष्पा प्रसाद
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट
कुचायकोट, गोपालगंज

विविध

ओम प्रकाश
उत्क्रमित उ० मा० विद्यालय दखली टोला
पीरपैंती, भागलपुर

डॉ० अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी
कोढ़ा, कटिहार

आलेख

विप्लव कुमार
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल
राजकीय मध्य विद्यालय सहसपुर
बारूण, औरंगाबाद

प्रज्ञानिका

अनुक्रमणिका

03. शुभकामना सन्देश

04. सम्पादकीय

05. पुरोवाक्

06. विद्यालय-गाथा

12. छात्र-गाथा

14. कक्षा-कक्ष गतिविधि

18. प्राचीन शिक्षण पद्धति और नई शिक्षा नीति

20. तस्वीरें बोलती हैं

24. नवाचार

26. प्रज्ञानिका आलेख

29. प्रेरक प्रसंग

30. ज्ञान पोटली

37. प्रथम अंक प्रज्ञानिका को मिला स्नेह

39. प्रज्ञानिका डिजिटल दुनिया

42. कला परिचय

44. प्रज्ञानिका साहित्य

57. बच्चों का कोना

60. स्वस्थ रहें मस्त रहें

62. शिक्षा जगत की खबरें

66. कैमरे की नज़र से बिहार दिवस

67. विविध

प्रज्ञानिका

शुभकामना संदेश

शिक्षा के क्षेत्र में बिहार ने अपने लिए एक विशिष्ट जगह बनाई है और प्रज्ञानिका पत्रिका भी अपने आप में एक विशिष्ट पत्रिका है जो शिक्षा के वितान को कुछ पन्नों में समेटे हुए है।पत्रिका के विभिन्न खंड बिहार राज्य के अलग-अलग 'शिक्षायी मोर्चों ' पर घटने वाली घटनाओं और संघर्षों परांत मिलने वाली उपलब्धियों के साक्ष्य हैं। प्रज्ञानिका पत्रिका को जन्मदेने वाले विचार और उसके विचारक साधुवाद के पात्र हैं। शिक्षा , शिक्षार्थी , विद्यालय, नवाचार,को पत्रिका पढ़ने के लिए आमत्रित करते हैं। कहानियाँ , कविताएं और संस्मरण से पगी यह पत्रिका पाठक की तस्वीरें और ज्ञान पोटली आदि सभी बहुत पठनीय हैं और सुधिजनों संवेदनाओं को झकझोरती है और साथ ही यह सोचने पर विवश करती है कि मानवीयता सबसे बाद गुण है। पत्रिका में बच्चों के झाँकते चेहरे और खिलखिलाती हँसी , उत्साहित कदम और कार्य – सभी बहुत प्रफुल्लित करने वाला है। बिहार के शिक्षकों,प्रधानाध्यापकों आदि के द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयासों का लेखा जोखा शेष राज्यों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रज्ञानिका पत्रिका के संपादक मण्डल और विशेष अतिथियों को साधुवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को यह आयाम और ऊँचाई दी है। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका-जगत में पठनीय पत्रिका के रूप में जानी जाएगी और शिक्षायी चेतना का संचार करेगी।पुनः बधाई और साधुवाद!

उषा शर्मा

प्रभारी
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ
एवं
प्रोफेसर
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी , नयी दिल्ली

प्रज्ञानिका

संपादकीय

आप सभी सम्मानित एवं महनीय शिक्षक साथियों को मेरा प्रणाम, अभिनंदन !

पुनः हमारी ठीम "ToB प्रज्ञानिका" के द्वितीय अंक को ले कर उपस्थित हैं।

"ToB प्रज्ञानिका" के प्रथम अंक को आप सभी ने इतना प्यार दिया कि मन प्रफुल्लित है, हर्षित है। एक शैक्षणिक पत्रिका को इतना स्नेह देने के लिए आप सब को हृदयतल की गहराइयों से धन्यवाद अर्पण करती हूँ।

साथियों मुझे यह कहते हुए बेहद गर्व की अनुभूति हो रही है कि प्रज्ञानिका के द्वितीय अंक के लिए आप सभी कर्मठ एवं लगनशील शिक्षकों की एक से एक कृति हमें प्राप्त हुई। और आपके द्वारा किये गए नवाचारों एवं बेहतर से बेहतर शैक्षणिक कार्यों की मोतियों को चुन कर हमने प्रज्ञानिका रूपेण माला को सजाया है। जिसका हर पृष्ठ बिहार के शिक्षकों के बेहतरीन कार्यों का साक्षी है। हमे पूरी उम्मीद है कि पुनः यह अंक आप सब के मन पर दस्तक देगी। यूँ ही अपना प्रेम और स्नेह हमारी पूरी "प्रज्ञानिका ठीम" पर बनाएं रखें।

खुश रहें, स्वस्थ रहें, मस्त रहें। बहुत धन्यवाद।

कुमारी निधि
राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त
न्यू प्राथमिक विद्यालय सुहागी,
किशनगंज बिहार
9430803248
Nidhisarojc@gmail.com

पुरोवाक्

अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रज्ञानिका का यह अंक आपके हाथों में है और टीचर्स ऑफ बिहार अपना छठा वार्षिकोत्सव मना रहा है।

प्रथम अंक को आप सुधीजनों ने जिस तरह से हाथों-हाथ लिया, मुझे ज़रा भी संदेह नहीं कि आगे आने वाले दिनों में यह पत्रिका आपकी पहली पसंद की शैक्षणिक पत्रिका हो जाएगी। हो भी क्यों न?यह पत्रिका शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए जो प्रस्तुत है। सीखने-सिखाने को बहुत-सी चीजें अपने अंदर संजोये यह प्रज्ञानिका आपको भी समान अवसर प्रदान करती है।आप भी उन विद्यालयों, शिक्षकों व नवाचारकर्त्ताओं की गाथा ढूँढ़ निकालिए जिनसे समाज में विकासपरक परिवर्त्तन परिलक्षित हुए हों। उन सकारात्मक कार्यकलापों को समाज के संज्ञान में लाने का हमारा नैतिक कर्त्तव्य भी तो है। इस छिद्रान्वेषी दौर में आखिर कौन बनेगा उनका सहचर?

हम आपको आश्वस्त करते हैं कि नई जानकारियों, समसामयिक लेखों तथा स्थायी स्तंभों की सामग्रियों से आपको हमेशा नयेपन की अनुभूति होती रहेगी। साहित्य का रसास्वादन मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रत्येक अंक कविता,कहानी,लघुकथा प्रभृति साहित्यिक विधाओं से लैस होकर आपको हस्तगत होता रहेगा।

'तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा'.....के साथ आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में---

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

प्रधानाध्यापक ने अपनी सैलरी से बना दिया लगभग आठ लाख का भवन

विनोद कुमार
प्रधानाध्यापक
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय बेलाहीराम पूर्वी
पताही, पूर्वी चंपारण

आज के हमारे विद्यालय गाथा में आप को लिए चलते है चंपारण की धरती पर। हम बात कर रहे हैं नवसृजित प्राथमिक विद्यालय बेलाहीराम पूर्वी की जो पूर्वी चम्पारण जिले के पताही प्रखण्ड के बेलाहीराम पंचायत अंतर्गत बेलाहीराम गाँव में स्थित है।

बिहार सरकार द्वारा उक्त गाँव में सन् 2010 ई. मे विद्यालय की स्थापना की गई और दो शिक्षक बहाल करते हुए पठन-पाठन के कार्य की शुरुआत हुई।

एक विद्यालय ऐसा भी

रसोइया द्वारा भूमि का किया गया दान

बताते चलें कि उक्त विद्यालय को अपनी जमीन व भवन नही होने के कारण विद्यालय बांसवारी के बीच संचालित होता रहा और दोनों शिक्षक अपनी मेहनत और लगन की बदौलत छात्रों के बीच शिक्षा का अलख जगाते रहे,नतीजा सकारात्मक दिखने लगा और दिन प्रतिदिन छात्रों की उपस्थिति बढ़ती चली गई। सुविधाविहीन विद्यालय होते हुए भी विद्यालय के प्रधानाध्यापक विनोद कुमार ने पोषक क्षेत्र के अभिभावकों से लगातार संपर्क बनाए रखा और विद्यालय को एक अलग रूप देने की ओर अपना कदम बढ़ाना शुरू किया।

अचानक सन् 2013 में राज्य के सभी भवनहीन व भूमिहीन विद्यालयों को बगल के विद्यालय में शिफ्ट करने का आदेश आया जिसके कारण इस विद्यालय को अपना पोषक क्षेत्र छोड़ दो किलोमीटर दूर उत्क्रमित मध्य विद्यालय बेलाहीराम में शिफ्ट होना पड़ा।

शिफ्ट होने के बाद भी प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों ने अपने प्रयास को नही छोड़ा और लगातार अभिभावकों से सम्पर्क अभियान जारी रखते हुए बच्चों की उपस्थिति कम नही होने दी और उन्हें बेहतर शिक्षा प्रदान करने की अपनी कोशिश को जारी रखा।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

अंततः विद्यालय की रसोइया मु. बबुनी देवी ने 7 डिसमिल जमीन फिर बाद में 16 डिसमिल विद्यालय के लिए सरकार के नाम कुल 23 डिसीमल जमीन विद्यालय के लिए दान में दी। जो अपने आप मे अनोखी बात है।
फिर क्या था,प्रधानाध्यापक विनोद कुमार ने बच्चों की परेशानियों को देखते हुए सन् 2021 में बीईओ से अपने ही पोषक क्षेत्र में विद्यालय संचालित करने को लेकर आदेश लिए और पुनः एक बार फिर विद्यालय अपने पुराने जगह संचालित होने लगा।

एचएम का अनोखा एवं शानदार काम
विद्यालय के प्रधानाध्यापक विनोद कुमार जी के अनुसार इन्होंने भवन निर्माण को लेकर कई बार विभागीय पदाधिकारी तक दौड़ लगाया जब इसे लेकर विभाग की ओर से जब इसपर कोई ध्यान नही दिया गया तो उन्होनें स्वयं अपने खर्च पर लगभग 8 लाख रुपए में दो वर्ग कक्ष, एक कार्यालय कक्ष, एक किचेन शेड एवं दो शौचालय का निर्माण कराया जिसकी सराहना प्रखण्ड ही नही बल्कि पूरे जिले मे हैं।

विद्यालय मे कुल पांच शिक्षक प्रधानाध्यापक सहित वर्तमान समय में बेहतर शैक्षिक माहौल तैयार करने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि उनके पोषक क्षेत्र के बच्चे न के बराबर प्राइवेट स्कूल में जाते हैं।

विद्यालय गाथा 2

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय पोखरपुर की दास्तान

बिहार राज्य के नालन्दा जिले के गिरियक प्रखंड में अवस्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय पोखरपुर स्वतंत्रता के पूर्व वर्ष 1940 में एक प्राथमिक विद्यालय के रूप में अस्तित्व में आया। विद्यालय मात्र औपचारिक विद्यालय के रूप में संचालित रहा। यदा-कदा किसी विद्यार्थी के प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने पर भी विद्यालय ने उसे याद नहीं रखा। समय बीतता गया और विद्यालय केवल नाम का विद्यालय रह गया।

शिक्षको के समुचित मार्गदर्शन के फलस्वरूप वर्ष 2012 से 2024 तक कुल 79 विद्यार्थी राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृत्ति प्रतियोगिता परीक्षा में सफल रहे हैं।

शिक्षा दिवस के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय का पुरस्कार प्रदान किया गया।

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत विद्यालय का मध्य विद्यालय में उत्क्रमण हो गया। समुदाय की आशाएँ अंगड़ाई लेने लगीं। लेकिन विद्यालय की रुग्णता यथावत विद्यमान रही। शिक्षकों की कमी का दंश झेलते विद्यालय के सौभाग्य की उम्मीदें दम तोड़ने लगीं। स्थिति यह हुई कि लगभग दो महीने इस विद्यालय की पहचान शिक्षक विहीन विद्यालय के रूप में रही। एक शिक्षक की प्रतिनियुक्ति कर विद्यालय का संचालन प्रारंभ किया गया। शिक्षक नियोजन के अंतर्गत तीन शिक्षक भी आये। किंतु शैक्षिक वातावरण में सुधार की स्थिति जस की तस रही। कालांतर में वर्ष 2007 में पाँच नियमित शिक्षकों का पदस्थापन हुआ और इसके बाद विद्यालय की दशा और दिशा परिवर्तित होने लगी। विद्यालय ने प्रगति की जो गति पकड़ी, वह अबतक अविकल एवं अविछिन्न है। फिर शिक्षक समूह में योग्य एवं कुशल शिक्षक जुड़ते गए और इस विद्यालय की सफलता का घोष यूनिसेफ मुख्यालय, न्यूयार्क तक होने लगा। भारत की प्रतिष्ठित पत्रिका "इंडिया टुडे" ने भी इस विद्यालय का छायाचित्र मुद्रित किया।

वर्ष 2007 में शैक्षिक सत्र के पूर्वार्ध में दैनिक छात्रोपस्थिति मात्र 45 से 60 रहती थी, लेकिन जब नवागंतुक शिक्षकों ने समय से एक घंटा पहले उपस्थित होकर अभिभावकों से संपर्क करना प्रारंभ किया तथा कक्षाओं का नियमित संचालन होने लगा तो नामांकन में वृद्धि हुई और नियमित उपस्थिति भी होने लगी।

प्रतिष्ठित पत्रिका इंडिया टुडे में भी मिल चुका है विद्यालय को स्थान

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

विद्यालय की एक छात्रा कराटे चैम्पियनशिप में भारतीय दल के साथ सिंगापुर एवं कोलम्बो तथा दूसरी छात्रा सिंगापुर एवं इंडोनेशिया गयी और क्वार्टर फाइनल राउण्ड तक अपनी उपस्थिति दर्ज कर राज्य का नाम रौशन कर चुकी हैं।

इतना सब होने के बाद अब बच्चों के उपलब्धि स्तर की संप्राप्ति के लिए कार्यारंभ हुआ। बच्चों के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखकर पाठ्य सहगामी गतिविधियों के प्रति भी बच्चों को प्रेरित किया जाने लगा। शिक्षकों के सम्मिलित प्रयास के अच्छे परिणाम रहे, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:-

वर्ष 2009 में इस विद्यालय की एक छात्रा कराटे चैम्पियनशिप में भारतीय दल के साथ सिंगापुर एवं कोलम्बो तथा दूसरी छात्रा सिंगापुर एवं इंडोनेशिया गयी और क्वार्टर फाइनल राउण्ड तक अपनी उपस्थिति का एहसास कराया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उससे पहले नालन्दा जिले के किसी भी सरकारी अथवा निजी विद्यालय की प्रारम्भिक कक्षा के किसी भी विद्यार्थी की विदेश यात्रा नहीं हुई थी।

सीमित संसाधन में विद्यालय की बेहतर व्यवस्था एवं उसके सुचारु संचालन की प्रक्रिया को अल्पविकसित देशों में अपनाये जाने के लिए नामीबिया एवं कंबोडिया से यूनिसेफ का प्रतिनिधिमंडल वर्ष 2011 में विद्यालय के दर्शनार्थ एवं अवलोकनार्थ आया। वर्ष 2013 में शिक्षा दिवस के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय का पुरस्कार प्रदान किया गया।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों को गणतंत्र दिवस एवं शिक्षक दिवस के अवसर पर जिला पदाधिकारी, नालन्दा एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी, नालंदा द्वारा कई बार शिक्षण कार्यों में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

शिक्षकों के समुचित मार्गदर्शन के फलस्वरूप वर्ष 2012 से 2024 तक कुल 79 विद्यार्थी राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृत्ति प्रतियोगिता परीक्षा में सफल रहे हैं। दो विद्यार्थी नवोदय विद्यालय पार्श्व प्रवेश परीक्षा तथा दो विद्यार्थी सिमुलतल्ला आवासीय विद्यालय पार्श्व प्रवेश परीक्षा में सफल रहे हैं।

बिहार दिवस 22 मार्च 2022 के शुभ अवसर पर इस विद्यालय की कक्षा 8 की छात्रा मुस्कान कुमारी ने राज्य स्तर पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त की यह एक विद्यालय के लिए सुनहरा पल था।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों की उपस्थिति राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित शैक्षिक सेमिनार, शैक्षिक कार्यशाला एवं विविध प्रशिक्षणचर्याओं में अनिवार्य रूप से होती रही है।

एस.सी.ई.आर.टी. बिहार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में गणित की पाठ्यपुस्तक एवं अभ्यास पुस्तक के विकास के लिए लेखकों गठित टीम में विद्यालय के शिक्षक श्री अनूप कुमार सिन्हा भी एक सदस्य हैं। विद्यालय में कक्षा 6, 7 एवं 8 के लिए स्मार्ट क्लास की व्यवस्था पिछले ग्यारह वर्षों से संचालित है। स्मार्ट क्लास की इसी व्यवस्था से प्रभावित होकर वर्ष 2017 में श्री कुन्दन कुमार, भारतीय प्रशासनिक सेवा, तत्कालीन उप विकास आयुक्त, नालन्दा ने इस विद्यालय में तथा अपने आवास पर विद्यालय के शिक्षक श्री अनूप कुमार सिन्हा एवं तकनीकी विशेषज्ञों के साथ कई बैठकों में विमर्श किया और माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए स्मार्ट क्लास की अवधारणा का विकास किया। फिर कुन्दन सर बाँका के जिला पदाधिकारी बने और यहाँ विकसित अवधारणा को सर्वप्रथम बाँका के विद्यालयों में उन्नयन बाँका के नाम से लागू किया गया जिसे माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने अनुमति दी और "उन्नयन बिहार" के नाम से बिहार के सभी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लास का शुभारंभ हुआ। इस प्रकार विद्यालय निरंतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रहता है।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

उनकी उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:-

1. वर्ष 2018 में कला समेकित अधिगम के अंतर्गत मध्य विद्यालय के शिक्षकों के लिए आयोजित पांच दिवसीय गैर आवासीय प्रशिक्षणचर्या के मास्टर ट्रेनर।
2. कोरोना काल में टीचर्स आफ बिहार के फेसबुक प्लेटफार्म पर लगातार 50 दिन एवं 35 दिन गणित का ऑनलाइन शिक्षण।
3. कोरोना काल में पीछे रह गए बच्चों के लिए डायट, नूरसराय (नालन्दा) में यूनिसेफ की मदद से कैच अप कोर्स का निर्माण उसके कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण।
4. वर्ष 2017-18 वर्ष 2018-19 में चंडी एवं गिरियक प्रखंड के सभी मध्य विद्यालयों के बाल संसद के 5-5 बच्चों एवं नोडल शिक्षक को प्रशिक्षण।
5. 2022 में नालंदा जिला के प्रत्येक प्रखंड में प्रखंड संसाधन केंद्र स्तर पर सभी मध्य विद्यालय के बाल संसद के 5-5 विद्यार्थियों एवं नोडल शिक्षक को प्रशिक्षण।
6. डायट नूरसराय में यूनिसेफ की सहायता से एफएलएन मॉड्यूल एवं Tool Kits का निर्माण तथा चंडी एवं गिरियक प्रखंड के प्रत्येक विद्यालय के शिक्षकों को संबंधित प्रशिक्षण।
7. SCERT पटना में यूनिसेफ, बिहार के निर्देशन में NEP 2020 के लर्निंग आउटकम की मैपिंग कर कक्षा 1 एवं 2 के गणित पाठ्यपुस्तक (Text Book) का लेखन।
8. कक्षा 1, 2, 4 एवं 5 के विषय गणित की कार्य पुस्तिका (Work Book) का लेखन।
9. एससीईआरटी, बिहार, पटना में कक्षा 3 से 5 तक के गणित के लिए आइटम डेवलपमेंट का कार्य।
10. बिहार शिक्षा परियोजना, बिहार, पटना में बाल संसद के मॉड्यूल निर्माण का कार्य।
11. बिहार शिक्षा परियोजना, बिहार, पटना में NEP 2020 में निहित अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes) के हिंदी अनुवाद का कार्य।
12. BPSC द्वारा नियुक्ति के लिए चयनित शिक्षकों के प्रशिक्षण के प्रयोजनार्थ यूनिसेफ एवं SCERT के निर्देशन में गणित विषय (कक्षा 6 से 8) के लिए Modules निर्माण।
13. वर्ष 2023 में इक्विटी एंड इंक्लूसिव एजुकेशन के अंतर्गत
    रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ
    भुवनेश्वर, उड़ीसा में आयोजित
    छह दिवसीय आवासीय
    प्रशिक्षण में प्रतिभागिता।
14. सीसीआरटी गुवाहाटी, असम में रोल ऑफ़ पपेट्री इन एजुकेशन इन लाइन विद्यालय NEP 2020 विषय पर 20 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण में प्रतिभागिता।
15. यूनिसेफ बिहार की सहायता से ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी दरभंगा में लीडरशिप डेवलपमेंट मॉड्यूल निर्माण का कार्य।
16. डायट नूरसराय में यूनिसेफ बिहार एवं LLF नई, दिल्ली के मार्गदर्शन में FLN का online एवं offline प्रशिक्षण।

विद्यालय एवं विद्यालय के शिक्षक की ये समस्त उपलब्धियाँ अंतिम नहीं है। विद्यालय की विकास यात्रा और प्रगति की गाथा जारी रहेंगी तथा विद्यालय के शिक्षक कभी विश्राम नहीं करेंगे। उनकी निष्ठा और प्रतिबद्धता निम्नलिखित पक्तियों से प्रदर्शित होती है:-

"गहन, सघन, मनमोहक वन तरु, मुझको आज बुलाते हैं,
किंतु किये जो वादे मैंने, याद मुझे वो आते हैं,
अभी कहाँ आराम? बड़ा यह मूक निमंत्रण छलना है,
अरे, अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है।"

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय पोखरपुर की दास्तां

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

अडिग हौसले की मिसाल: सोनल की कहानी

मध्य विद्यालय खजुरा, रामपुर की कक्षा सात की छात्रा सोनल कुमारी, जो ओमप्रकाश सिंह की बेटी हैं, सिर्फ नाम ही नहीं, बल्कि साहस और दृढ़ संकल्प की जीती-जागती मिसाल हैं। वर्ष 2019 में एक दर्दनाक दुर्घटना ने उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल दी। उस हादसे ने उनसे उनका बायां पैर छीन लिया, लेकिन उनके इरादों को कभी कमजोर नहीं कर पाया।

एक दुर्घटना ने सोनम का एक पैर छीन लिया, परन्तु सोनम के हौसले ने उसे गिरने या रुकने न दिया ।

जब कई लोग अपनी परेशानियों के आगे घुटने टेक देते हैं, तब सोनल ने अपनी लाठी को सहारा नहीं, बल्कि अपनी ताकत बना लिया। बिना किसी कृत्रिम सहारे के, एक पैर से संतुलन बनाते हुए, हर दिन स्कूल आना, पढ़ाई करना, और अपने सपनों को जिंदा रखना ये सब उनके बुलंद इरादों का प्रमाण हैं।

आज का दिन सोनल के लिए खास था। समावेशी शिक्षा योजना के तहत, डीपीओ सर ने उन्हें एक कृत्रिम अंग प्रदान किया। लेकिन यह सिर्फ एक कृत्रिम अंग नहीं था, यह उनके संघर्ष, उनके साहस, और उनकी मेहनत का सम्मान था। जब डीपीओ सर ने उन्हें अपने कुर्सी पर बैठने का सम्मान दिया, तो पूरे हॉल में तालियों की गूंज सुनाई दी। यह तालियां सिर्फ खुशी की नहीं थीं, बल्कि सोनल के अडिग जज़्बे की गवाही दे रही थीं।

जिलाशिक्षा पदाधिकारी ने न सिर्फ उनके हौसले की सराहना की, बल्कि उनकी परेशानियों को समझने के लिए खुद उनके पास बैठकर उनकी यात्रा सुनी। कैसे एक पैर से स्कूल आना उनके लिए चुनौती भरा था, कैसे सीढ़ियां चढ़ना-उतरना हर दिन एक नई जंग होती थी, और कैसे समाज के ताने उनके दिल को चोट पहुंचाते थे। लेकिन सोनल की आँखों में कोई शिकवा नहीं था, बस सपनों को पूरा करने की ललक थी।

प्रज्ञानिका की पूरी टीम बिहार की इस बहादुर बिटिया के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।.

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

अडिग हौसले की मिसाल: सोनल की कहानी

डीपीओ सर ने न सिर्फ उन्हें मदद का आश्वासन दिया, बल्कि यह वादा भी किया कि सोनल जैसी हर बच्ची को शिक्षा के अवसर मिलें, और कोई भी शारीरिक अक्षमता उनकी उड़ान को न रोक सके।

सोनल की यह कहानी सिर्फ उनके साहस की नहीं, बल्कि हर उस इंसान के लिए एक सबक है, जो जिंदगी की छोटी-छोटी मुश्किलों से घबरा जाते हैं। क्योंकि हौसले बुलंद हों, तो कोई भी मुश्किल रास्ता रोड़ा नहीं, बल्कि नई उड़ान भरने का ज़रिया बन जाता है।

सोनल, तुम अकेली नहीं हो—तुम हर उस सपने का प्रतीक हो, जो संघर्षों के बावजूद भी पूरा किया जा सकता है!

3 कक्षा कक्ष गतिविधि

अनीश चंद्र रेणु

अनीश चंद्र रेणु,
उत्क्रमित हाई स्कूल बुढ़कारा
कटरा मुजफ्फरपुर

WHAT IS WRONG WITH INDIAN FILMS

Satyajit Ray

SATYAJIT RAY, born on May 2, 1921, was a wellknown film director of India. He earned international recognition for his talent in film-making and direction. Best known for his 'Pather Panchali, 'Aparajto', 'Charulata' and 'Shatranj Ke Khilari', he won awards at international film festivals in Venice, Cannes and Berlin. Ray used to compose music for his own films. He was also a story writer, illustrator and book designer. Oxford University conferred on him an honorary doctorate degree, an honour which very few people have received. In the present essay, taken from his book ***Our Films, Their Films,*** *he examines the nature of our films and points out their defects. He is extremely critical of the quality of our film-making, direction as well as content.*

A. Work in small groups and discuss the following:

1. **Have you seen any film recently?**
2. **Tell the name of any film which you like most. Point out its salient features.**

कक्षा कक्ष गतिविधि

अनीश चंद्रा रेणु

सत्यजित राय के निबंध "भारतीय सिनेमा की समस्याएँ" को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित नवाचारात्मक शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) अथवा गतिविधि का उपयोग किया जा सकता है।

1. फिल्मी पोस्टर गतिविधि (Film Poster Activity)

विधि:

कक्षा को छोटे समूहों में बाँटें।

प्रत्येक समूह को दो पोस्टर दिए जाएँ—एक सफल भारतीय फिल्म का और दूसरा कमज़ोर कहानी वाली फिल्म का।

छात्र विश्लेषण करें कि कौन-सी फिल्म सत्यजित राय के विचारों के अनुसार बेहतर है और क्यों।

लाभ:

छात्रों में आलोचनात्मक सोच (critical thinking) विकसित होगी।

वे अच्छी और बुरी फिल्मों में अंतर समझेंगे।

2. चलचित्र समीक्षा (Movie Review – फिल्म क्लिप का विश्लेषण)

विधि:

एक प्राकृतिक अभिनय (realistic acting) वाली फिल्म और एक अत्यधिक नाटकीय फिल्म के 5-5 मिनट के क्लिप दिखाएँ।

छात्रों से पूछें: "इनमें से कौन-सा सिनेमा अधिक वास्तविक लगता है और क्यों?"

चर्चा करें कि सत्यजित राय ने अत्यधिक नाटकीय अभिनय की आलोचना क्यों की थी।

लाभ:

छात्र वास्तविकता और बनावटी अभिनय का अंतर समझेंगे।

वे अपनी अभिव्यक्ति क्षमता सुधारेंगे।

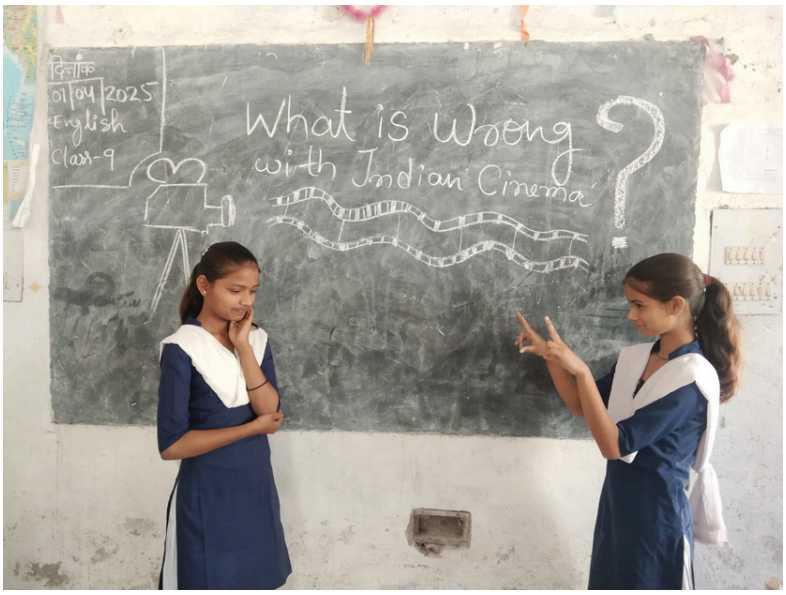

Class 10th
WHAT IS WRONG WITH INDIAN FILMS

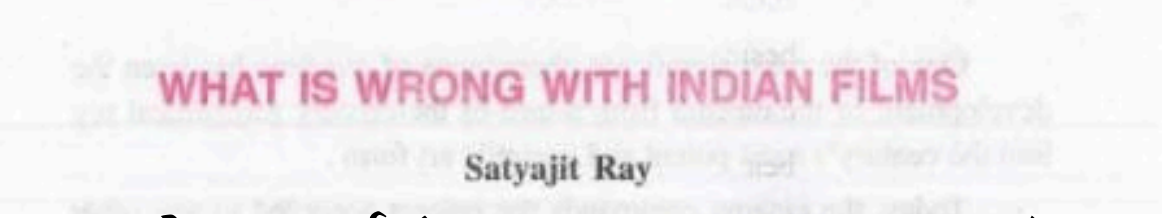

3. पटकथा लेखन कार्य (Script Writing Activity)

विधि:
छात्रों को एक सामाजिक समस्या (जैसे – शिक्षा, बेरोजगारी, पर्यावरण) पर संवाद-आधारित छोटी स्क्रिप्ट (script) लिखने को कहें।
स्क्रिप्ट को व्यावसायिक (commercial) और कलात्मक (artistic) शैली में विभाजित करें।
कक्षा में दोनों प्रकार की स्क्रिप्ट का अभिनय कराएँ और सत्यजित राय की आलोचना के संदर्भ में चर्चा करें।

लाभ:
छात्रों की रचनात्मकता बढ़ेगी।
वे सिनेमा और समाज के संबंध को समझेंगे।

छात्रों की तर्कशक्ति और विश्लेषण क्षमता विकसित होगी।
वे भारतीय सिनेमा के वर्तमान परिदृश्य को समझेंगे।

4. "सत्यजीत राय बनो" – रोल प्ले गतिविधि (Role Play as Satyajit Ray)

विधि:

एक छात्र को सत्यजित राय की भूमिका दें।
अन्य छात्र उनसे प्रश्न पूछें:
"आप भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी समस्या क्या मानते हैं?"
"आपने 'पाथेर पांचाली' जैसी फिल्म क्यों बनाई?"
"आप गानों और मृत्यों के बारे में क्या सोचते हैं?"
"सत्यजित राय" का किरदार निभाने वाला छात्र निबंध के आधार पर उत्तर देगा।

लाभ:
छात्रों में सृजनात्मक सोच बढ़ेगी।
वे सत्यजीत राय की फिल्मी दृष्टि और विचारधारा को आत्मसात कर पाएंगे।

WHAT IS WRONG WITH INDIAN FILMS

Satyajit Ray

5. डिजिटल प्रदर्शनी (Digital Presentation/ Collage Making)

विधि:

छात्रों को भारतीय सिनेमा के अलग-अलग दौर (ब्लैक एंड वाइट, 70s-80s, आधुनिक युग) के चित्र एकत्र करने दें।

वे एक कोलाज बनाएँ और यह बताएं कि किस दौर की फिल्में सत्यजित राय के विचारों के करीब हैं।

लाभ:

छात्र भारतीय सिनेमा के विकास को समझेंगे।

रचनात्मकता और शोध कौशल में सुधार होगा।

निष्कर्ष:

इन नवाचारात्मक TLMs का प्रयोग करने से कक्षा में सक्रिय सहभागिता (active learning) होगी। सत्यजीत राय के विचारों को समझने के लिए यह पारंपरिक रटने के तरीकों से कहीं अधिक प्रभावी और रोचक होगा।

प्राचीन शिक्षण पद्धति और नयी शिक्षा नीति

वैश्विक परिवर्तनों के दौर में नयी पीढ़ियां कदम से कदम मिला सकें, इसके लिए नयी शिक्षा नीति लाकर शिक्षण प्रणालियों में आवश्यक परिवर्तन किए गये। यह परिवर्तन न तो नया है, न ही अस्वाभाविक। प्राचीन काल में भारत की यही शिक्षण पद्धति रही है।

मुकेश कुमार मृदुल
उच्च माध्यमिक विद्यालय दिघरा, पूसा, समस्तीपुर,

नयी शिक्षा नीति ने प्राचीन शिक्षण व्यवस्था को आधुनिक स्वरूप में परिवर्तित होते हुए दिखाया है। इसके अनेक प्रावधान गुरूकल शिक्षण पद्धति का अनुसरण करते दिखते हैं। हमें नये वातावरण में अपनी प्राचीन प्रणाली को अपनाना है। यह सुखद बात है। हम अपनी सांस्कृतिक विरासत की ओर लौटे हैं। आश्रम की व्यवस्थाएं व्यावहारिक शिक्षा पर आधारित थीं। जीवन के समस्त आचार, विचार और व्यवहार को शिष्य अपने गुरु के सान्निध्य में करके सीखते थे। इससे शिष्यों के जीवन में ज्ञान का सहज प्रवाह होता था और वे अपने जीवन को आनंदपूर्वक व्यतीत करने में सक्षम होते थे। इतना ही नहीं उनमें मुसीबतों के समय निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है। और अगर मुसीबतों का सामना करने में कोई व्यवधान होता, तो वे उसका समाधान खोजन के लिए पुनः आश्रम की ओर रूख करते थे। नयी शिक्षा नीति में व्यावहारिक ज्ञान देने का प्रावधान, भारतीय संस्कार को संरक्षित करने का उपक्रम है। यह उपक्रम नयी पीढ़ियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बढ़ने की क्षमता ही नहीं प्रदान करेगा, बल्कि उन्हें अपने जीवन को सहज और सुंदर बनाने का अवसर भी प्रदान करेगा। बच्चे जिस वातावरण में पल - बढ़ रहे हैं, उसके साथ जुड़कर वैश्विक ज्ञान को प्राप्त करना जीवन के लिए अनिवार्य प्रतीत होता है। जीवन का अपनी जड़ से जुड़कर मुक्त आकाश में पल्लवित -पुष्पित होना सौंदर्यमय और सुखदायक होगा।

मातृभाषा में शिक्षण बच्चों में सहज शिक्षा के साथ - साथ जीवन शैली में गुणात्मक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का कार्य करेगा। विविध भाषाओं की पढ़ाई करना व्यक्ति की क्षमता और प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। मगर वह कैसी विद्वता कि हम अपनी प्रारंभिक भाषा, जो हमें माँ से मिली थी , उसमें हिचक रहे हैं। बच्चों में स्वाभाविक शिक्षण के लिए प्रारंभिक कक्षा से ही मातृभाषा में शिक्षा भाषा ज्ञान को भी समृद्ध करेगी। मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षण की सुगमता, बच्चों में विकास की तीव्रता के साथ संबंधों के उत्तरदायित्वों के प्रति भी जुड़ाव पैदा करने में सहायक सिद्ध होगी। शिक्षा के अतिरिक्त माँ और संतान के संबंधों को मजबूती प्रदान करने में भी कारगर सिद्ध होगी। माँ के साथ संतानों का संबंध अटूट होना चाहिए। इसे सैद्धातिक और नैतिक समझने की मूर्खता कदापि नहीं हो। प्रत्येक प्राणियों का जीवन और शरीर का जुड़ाव माँ से है। अविवेकी जानवरों को भी इसका भान पंचानबे प्रतिशत तक खुद के जीवन के अंतिम क्षणों तक रहता है। आदि ग्रंथों में कहा गया है - 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।' इस प्रकार मातृभाषा की शिक्षा सहज अधिगम की ओर ले जाने के साथ - साथ माताओं के प्रति श्रद्धात्मक अनुराग में भी अभिवृद्धि करेगी।

जीवन के समग्र विकास के लिए व्यावसायिक शिक्षा को भी शामिल करना, शिक्षा को जीवन निर्वहन के लिए बनाना बहुत जरूरी था। आश्रम की व्यवस्था में भी प्रत्येक बच्चे को अपनी रूचि के मुताबिक शिक्षा प्राप्त करने की आजादी थी। गदा, धनुष, भाला, तलवार आदि अस्त्र - शस्त्रों में जिसका चयन बच्चे करते , उन्हें उसी में दक्ष किया जाता था। शास्त्र की विद्या में भी यही स्वतंत्रता थी। जिनकी रूचि जिस विषय में होती, उन्हें केवल उसी की शिक्षा दी जाती थी। आज के दौर में भी ऐसी ही शिक्षा की जरूरत थी। नयी शिक्षा नीति के प्रावधान ने शिक्षा के इसी नजरिए को परिवर्तित करने का कार्य किया। आज के बच्चे भी स्वतंत्र होंगे अपनी रूचि के मुताबिक व्यवसाय को अपनाने के लिए। इससे उनमें उनका हुनर निखरेगा। इससे कौशल का अत्यधिक विकास होगा। कौशलों के विकास से कलात्मक प्रतिभाएं तेजी से बढ़ती हैं। अपनी रुचि के अनुरूप यदि वह कौशल प्राप्त करें,तो उनकी सफलता निरापद रहती है। वे पूरे मनोयोग से काम करते हैं और उसे दिखाकर अपूर्व आनंद की अनुभूति ही नहीं करते, स्वयं पर गर्व भी करते हैं।

मुकेश कुमार मृदुल

प्राचीन शिक्षण पद्धति और नयी शिक्षा नीति

वैश्विक परिवर्तनों के दौर में नयी पीढ़ियां कदम से कदम मिला सकें, इसके लिए नयी शिक्षा नीति लाकर शिक्षण प्रणालियों में आवश्यक परिवर्तन किए गये। यह परिवर्तन न तो नया है, न ही अस्वाभाविक। प्राचीन काल में भारत की यही शिक्षण पद्धति रही है।

डिजटल शिक्षा तो युग की माँग है। जीवन के सभी क्षेत्रों में अब इसका प्रवेश हो गया है। इसलिए शिक्षण तकनीक को इस ओर मुड़ना व्यक्ति और समाज के विकास के लिए काफी आवश्यक है। डिजिटल कौशल व्यावहारिक शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के अतिरिक्त अन्य शिक्षाओं को आकर्षक और रूचिकर बनाने में सहायक और प्रभावी सिद्ध हो रहा है। इन सबों के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ठीक होना अतिआवश्यक है। आश्रम के प्राणायाम, ध्यान और योग की साधना तो मुख्य क्रियाकलाप थे, जिनके सहारे लंबी आयु तक तपस्वी स्वस्थ रहते थे। नयी शिक्षा नीति ने शारीरिक शिक्षा पर भी बल दिया है, जो सुखकारी सिद्ध हो रहा है।

नयी शिक्षा नीति में सिर्फ बच्चों की शिक्षा में ही बदलाव नहीं किये गये, बल्कि शिक्षकों के लिए भी शिक्षा को अनिवार्य किया गया है। प्राचीन काल में भी आश्रम के महर्षि विषय बिंदु पर विमर्श करने के लिए दूसरे आश्रम के ऋषि के पास जाकर कुछ समय व्यतीत करते थे। या कई आश्रमों के गुरू किसी एक आश्रम में कुछ दिनों तक रहकर एक - दूसरे के साथ विचारों का आदान- प्रदान किया करते थे। नयी शिक्षा नीति के प्रावधानों के मुताबिक प्रतिवर्ष शिक्षकों का प्रशिक्षण प्रारंभ हो जाना शिक्षा के स्तर को मजबूती प्रदान करेगा।

उच्च माध्यमिक विद्यालय दिघरा,
पूसा, समस्तीपुर,

5

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

M.S.Dhangar Toli .purnea east

मध्य विद्यालय सैनो जगदीशपुर भागलपुर

प्राथमिक विद्यालय लावा टोल हनुमान नगर,दरभंगा

मध्य विद्यालय तारलाही, हनुमान नगर,दरभंगा

M.S.Sinduar,Daudnagar , Aurangabad

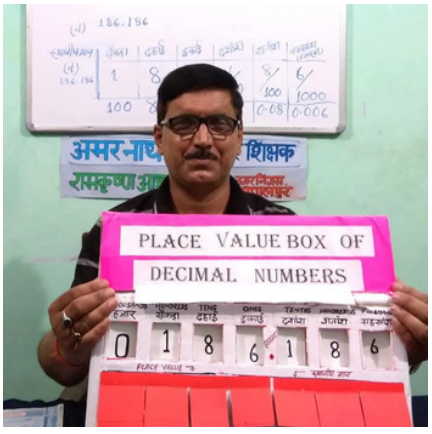

राम कृष्ण आश्रम मध्य विद्यालय नगर निगम, भागलपुर

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

M.S Daud Chapra Minapur Muzaffarpur

गुलाम मुस्तफा सिवान

मध्य वि हसनपुर

लक्ष्मी कुमारी पूर्णिया

रविकांत शास्त्री भागलपुर

कविता कुमारी

राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट गोपालगंज

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन, सिवान

उत्क्रमित उच्च मा० वि० दखली टोला, पीरपैंती, भागलपुर

उ० म० वि० . सादिकपूरा नालंदा

प्राथमिक विद्यालय कौआली टोला मुसहरी अररिया

मध्य विद्यालय ओरियप, कहलगांव, भागलपुर

7 PHOTO OF THE DAY

प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया, अररिया

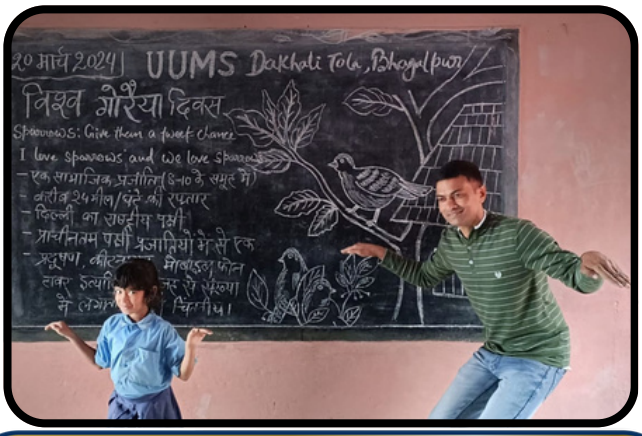

उत्क्रमित उ.म.वि.दख़ली टोला,भागलपुर

उच्च मा. वि. केवटगामा, दरभंगा

म. वि. सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

म. वि. अरिहाना, आजमनगर, कटिहार

म.वि. दाउद छपरा,मुजफ्फरपुर

नवाचार

आज आपको ले कर चलते हैं अररिया जिले के प्राथमिक विद्यालय कौवाली टोला मुसहरी में। आपको बताते है एक होनहार शिक्षक मोहम्मद शाहनवाज़ आलम के नवाचारों के विषय में।

शाहनवाज आलम विद्यालय के प्रभारी प्रधान शिक्षक हैं। जब इन्होंने विद्यालय में योगदान दिया तो ना ही इस विद्यालय के पास जमीन थी और ना ही भवन।

इतना ही नहीं इन्होंने देखा यह विद्यालय तो दूसरे विद्यालय में टैग है दूरी होने के कारण बच्चे भी नहीं आते है। आगे शाहनवाज़ जी बताते हैं मैं बच्चो के अभिभावक से मिला और विद्यालय आने को प्रेरित किया तो कुछ बच्चे आते तो पता चला कि रहन सहन में दिक्कत है पहनावा साफ सफाई भी ठीक नहीं है जैसे तैसे ही कुछ बच्चे विद्यालय आते है।

मैने एक योजना बनाई पर उसमें और पदाधिकारी से आग्रह कर के विद्यालय के मूल स्थान पर शिफ्ट किया जिसमें ग्रामीणों ने भरपूर सहयोग किया कब्जे वाली जमीन पर थोड़ी सी स्थान हाथ जोड़कर लिए और प्रण लिया कि यहां की आव हवा , नक्शा सब बदल देंगे और मेहनत शुरू ही किए की लॉक डाउन लग गया और अब कुछ के साथ विद्यालय भी बन्द कर देने की बात हुई। जैसे तैसे समय कटता गया कभी विद्यालय में चावल बाटे तो कभी कोरोना में ड्यूटी किया। अभी तक मुझे कुछ खास उपलब्धि नहीं मिली थी,फिर वर्ष आया 2021 जब बच्चो के लिए विद्यालय खुल गया

जोर शोर से पोशक छेत्र में घूम कर ऐडमिशन लिए बहुत कड़ी मेहनत किए सबसे पहले बच्चो की साफ सफाई एवं रहन सहन पर फोकस किए उनके नियमित विद्यालय आने पर जोर दिए आप को बताते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है कि वह पल बहुत ही सुखद और आनंददायक था। अब बच्चे प्रत्येक दिन स्नान कर के तेल कंघी क्रीम लगाकर घर से खुद आने लगे।

प्राथमिक विद्यालय कौआली मुसहरी अररिया के शिक्षक शाहनवाज़ ने बदल दी विद्यालय की तस्वीर।

नवाचार

जब भी किसी के माता पिता से मिलते तो हाथ जोड़कर नम्र नवेदन से बच्चो को तैयार कर विद्यालय आने को बोलते कुछ माह बीत जाने के बाद फिर हमलोगो ने विद्यालय पोशाक पर जोड़ दिया कि जो बच्चे विद्यालय पोशाक पहन कर आयेंगे उनको हमलोग अच्छे गिफ्ट देंगे साथ ही साथ शिक्षक अभिभावक गोष्ठी के अभिभावक से आग्रह किया पोशाक में लाने में एक साल लग गए। एक छोटी सी छपरी के नीचे शिक्षा दे पाना आसान नहीं था कभी आंधी आती तो बच्चे डरे सहमे रहते बारिश होती तो झटका से बैठने के स्थान पर पानी जमा हो जाता। वर्ष 2022 के लास्ट में विद्यालय का भवन प्राप्त हुआ। अब जब भवन बनाने की बारी आई जो जमीन कब्जा से मुक्त ही नहीं हो पाया बहुत प्रयास किए तो पता चला कि जो जमीन विद्यालय को रजिस्ट्री हुई वह पहले ही लाल कार्ड पर है जिसपर भवन बनाना उचित नहीं है अब सपना टूटा सा लग रहा था सभी ने साथ छोर दिया। लेकिन मैं हिम्मत नही हारा जमीन उपलब्ध करवाकर फिर नया बीस डिसमिल भूमि प्रधानमंत्री सड़क किनारे रजिस्ट्री करके विद्यालय भवन की नींव रखे और जब भवन बनकर तैयार हुआ तो लोगों को कहना पड़ा कि उच्च कोटि का प्राइमर विद्यालय भवन बना है रंगीन पेंटिंग अपने मन मुताबिक करवाए इस प्रयास से सब कुछ साथ चलता रहा परिस्थिति से लड़ते रहे और आगे बढ़ते रहे वर्ष 2024 में वेंडर द्वारा चहारदीवारी निर्माण करवाए मुखिया जी के द्वारा पूरे परिसर में पेवर ब्लॉक्स बिछवाए आज विद्यालय में दोनो तरफ अशोक का वृक्ष लगाए है जो कि बहुत आकर्षक लगते हैं।

आज विद्यालय में ना कवेल हरियाली छाई है बल्कि दर्जनो किस्म के पुष्प लगाए गए है।
पर्याप्त शौचालय है।रनिंग वाटर है हैंड वाश स्टेशन है पानी निकासी की अच्छी सुविधा है,खाने के लिए कैंटीन बनाए है जहां बच्चे बेंच पर बैठ कर खाते है। प्रत्येक कक्ष में खेल सामग्री एवं TLM है।विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते है जिसमें सभी पोषक क्षेत्र के अभिभावक भी रुचि लेते है।विद्यालय शिक्षा समिति का शुरू से ही भरपूर समर्थन मिला जो आज तक मिल रहा है।आगे और भी बेहतर करने का प्रयास जारी है।

बिहार के सरकारी विद्यालयों की बदल रही है तस्वीरें

"हमारे विद्यालय बदल रहे हैं, हमारा बिहार बदल रहा है।"

बिहार के सरकारी विद्यालयों की तस्वीरें बदलने लगी है। वर्तमान समय में शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे बेहतर प्रयोग से छात्र-छात्राओं की उपस्थिति विद्यालय में शत-प्रतिशत हो रही है।

उक्त बातें मृत्युंजय कुमार, शिक्षक, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला,पताही, पूर्वी चम्पारण ने कही है। उन्होंने कहा कि बच्चे विद्यालय में प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की नवाचारी गतिविधि के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और इसमें मुख्य भूमिका विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षकों की है जो लगातार बिहार के सरकारी विद्यालयों में बेहतर शैक्षिक माहौल तैयार करने को लेकर अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

ऐसी नवाचारी गतिविधि को राज्य के सरकारी विद्यालय, शिक्षक एवं छात्रों तक पहुंचाने के लिए बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी "टीचर्स ऑफ बिहार-द चेंज मेकर्स" समूह द्वारा विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से विगत छह वर्षों से लगातार काम किया जा रहा है जिसका असर अब राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में देखने को मिल रहा है।

शिक्षक मृत्युंजय कुमार ने बताया कि "टीचर्स ऑफ बिहार" एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां बिहार के सरकारी विद्यालय के एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट शिक्षक बिहार के सरकारी विद्यालयों की दशा व दिशा बदलने के लिए बिना किसी सरकारी सहायता के निःस्वार्थ भाव से काम कर रहे हैं।

अभी विगत वर्ष ही टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा शिक्षाहित में किए जा रहे बेहतरीन कार्यों की सराहना राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने भी की है और देश के सभी राज्यों में ऐसी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी (पीएलसी) लागू करने की बात की है जिसका जिक्र एनईपी 2020 में भी है।

शिक्षक मृत्युंजय कुमार ने बताया कि सरकारी विद्यालय में शत-प्रतिशत गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक माहौल तैयार करने को लेकर बिहार के शिक्षकों के लिए टीचर्स ऑफ बिहार एक बेहतर मंच प्रदान करता है जहां वर्तमान समय में बिहार ही नहीं बल्कि अन्य राज्यों से भी लाखों शिक्षक जुड़कर प्रतिदिन अपने विद्यालय में कराए जा रहे नवाचार, गतिविधि व अन्य शैक्षणिक कार्य साझा करते हैं जिसे देखकर अन्य शिक्षक भी प्रेरित होकर अपने विद्यालय में इसे लागू करते हैं।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
प्रखण्ड-पताही जिला-पूर्वी चंपारण

अभिभावकों के सक्रिय भागीदारी के बिना अपेक्षित शैक्षिक प्रगति संभव नहीं

विप्लव कुमार, विशिष्ट शिक्षक
मध्य विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

अगर अभिभावकों को स्कूल से भावनात्मक और सामाजिक रूप से जोड़ा जाए तो सरकारी विद्यालयों की स्थिति में व्यापक सुधार की गुंजाइश है।

बेहतर शैक्षणिक माहौल केलिए अभिभावकों में जागरूकता आवश्यक है।माता - पिता हीं बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा के पहले गुरु होते है और उनका दृष्टिकोण, समर्थन और मार्गदर्शन बच्चे की शैक्षणिक प्रगति में अहम भूमिका निभाते है।

सरकारी विद्यालयों में शैक्षणिक प्रगति धीमी रफ्तार की यह एक बड़ी वजह है।सरकारी विद्यालयों में अभिभावकों की समझदारी और भागीदारी बच्चों की शैक्षिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अधिकांश सरकारी विद्यालयों में अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी अपेक्षाकृत कम देखी जाती है, जिसका मुख्य कारण जागरूकता की कमी, आर्थिक सीमाएं आदि हो सकती है।पर इसका प्रतिकूल प्रभाव विद्यालय के शैक्षणिक गुणवत्ता पर पड़ता है।इसके लिए शिक्षा विभाग निरंतर प्रयासरत है।अभिभावकों की समझदारी बढ़ाने के लिए कई आवश्यक कदम उठाए जा रहे है।जिससे अभिभावकों का झुकाव विद्यालय की ओर हुआ है।

अभिभावकों को यह समझाना आवश्यक है कि शिक्षा से उनके बच्चों का भविष्य कैसे बेहतर हो सकता है।इसके लिए नियमित रूप से अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (PTM) आयोजित कर बच्चों की प्रगति पर चर्चा की जाए। इससे अभिभावकों को बच्चों की जरूरतें समझने में मदद मिलेगी। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे कि मिड-डे मील, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें,गणवेश आदि के बारे में सही जानकारी देना।इससे वे बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित होंगे। इसके अलावा महिलाओं, विशेष रूप से माताओं को शिक्षा से जोड़ा जाए और उन्हें साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए। ग्राम सभा, मोहल्ला समितियों और स्कूल प्रबंधन समितियों (SMC) के माध्यम से समुदाय को स्कूल से जोड़ा जाए, जिससे अभिभावकों की भागीदारी स्वाभाविक रूप से बढ़े।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

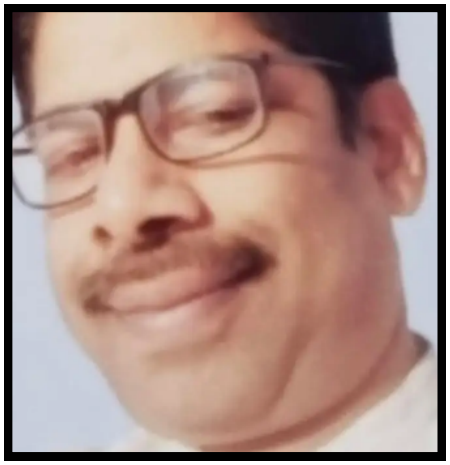

हमारा भारत संस्कृति प्रधान देश है। यहाँ के प्राचीन इतिहास के पन्ने नारियों की गौरवमयी कीर्ति से भरे-पड़े हैं। हमारे पूर्वजों का कहना है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन श्लोक है-" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:" परन्तु इसका पूरा श्लोक है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्रा फला: क्रिया:।।

अर्थात् कहने का तात्पर्य है कि जहाँ नारियों को सम्मान मिलता है, वहाँ देवगण वास करते हैं। इसके ठीक विपरीत जहाँ इनका अपमान होता है, वहाँ उन्नति नहीं होती है। यानी कोई भी कार्य फलीभूत नहीं होता है। मार्कण्डेय पुराण में सभी स्त्रियों को आदिशक्ति का स्वरूप माना गया है-

विद्या समस्तास्तव देवि भेदा:। स्त्रिय: समस्ता सकला जगत्सु।।

यहाँ तक कि वेदों में भी नारी को घर कहा गया है। यानि गृहिणी ही घर है। गृहिणी के द्वारा ही गृह का अस्तित्व है। इनसे ही घर की शोभा है। सच में गृहिणी गृहस्थ जीवन रूपी नौका की पतवार है। वह अपने बुद्धि- बल, चरित्र- बल, अपने त्यागमय जीवन से इस नौका को थपेड़ों तथा भँवरों से बचाती हुई किनारे तक पहुँचाने का प्रयास करती हैं। यही भाव संस्कृत में कहा गया है -" न गृहं गृहमित्याहु: गृहिणी गृहमुच्यते:।" यथार्थ के धरातल पर देखा जाए तो यहाँ स्त्रियों की पूजा से मतलब केवल उनकी मान- मर्यादा की रक्षा तथा उनके अधिकारों की रक्षा से है। उन्हें घर की लक्ष्मी और गृह देवी के नाम से सम्बोधित किया जाता था। उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा मिलती थी, उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। परिवार में उनका पद अत्यंत ही सम्मानजनक था। गृहस्थी का कोई भी कार्य बिना उनकी सम्मति के नहीं किया जाता था। कई क्षेत्रों में अपने स्वामी से वे आगे रहती थीं। धार्मिक कार्य उनके बिना अपूर्ण समझा जाता था। यहाँ तक कि रण क्षेत्रों में भी अपने पति का बढ़-चढ़कर साथ देती थीं। देवता और असुर के संग्राम में कैकयी ने अपने अद्वितीय कौशल राजा दशरथ को चकित कर दिया था। अपनी बुद्धि, योग्यता और विद्वत्ता के सहारे ही द्रौपदी अपने पतियों को युद्ध व वनवास काल भी सुंदर परामर्श देती थीं। मैत्रेयी, शकुन्तला, सीता, अनुसूया, दमयंती, सावित्री इत्यादि स्त्रियाँ इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जहाँ नारी का सम्मान, वहाँ देवियों का सम्मान व देवताओं का मान। परन्तु यह सम्मान केवल कहने मात्र से नहीं अपितु उनकी शक्ति की पहचान कर उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने से होगा, उनकी मान-मर्यादा व उनके अधिकारों की रक्षा से होगा। यों कहा जाए कि स्त्रियाँ बागों की कली हैं, इनसे ही बागों की शोभा है। कलियों को यदि सुरक्षित रखीं जाएँ तो आगे चलकर वे फूल का रूप बन जाएँगीं और जीवन रूपी बगिया को सुरभित व सुवासित करेगीं।

अत: गृह- लक्ष्मी की शोभा से ही समाज, देश, जगत्, सृष्टि व सारे देवताओं व देवियों की शोभा है। इनका अनादर यानि आदिशक्ति का अनादर। सम्प्रति हमारे देश की स्त्रियाँ चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या सामाजिक, राजनीति ,खेल या संगीत का क्षेत्र हो किसी में भी कम नहीं हैं। उत्तरोत्तर प्रगति ही हो रही हैं। इस चमक को सम्मान के साथ कायम रखने की आवश्यकता है। यदि हमारे देश के पुरुष हृदय से चाहें कि स्त्रियाँ भी आगे बढ़ें और कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दें तो देश स्वर्ग बन जाएगा।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
'शिक्षक' मध्य विद्यालय
धवलपुरा, सुलतानगंज,
भागलपुर, बिहार

रामू का विद्यालय

रणजीत कुमार
प्राथमिक कन्या विद्यालय लक्ष्मीपुर
रोसड़ा समस्तीपुर बिहार

शहर से कोसों दूर एक गांव था। उस गाँव के छोटे से स्कूल में आज हर्ष और उल्लास का माहौल था। प्रधानाध्यापक जी ने घोषणा की थी कि इस बार विद्यालय जागरूकता अभियान चलाया जाएगा, जिसमें वैसे छात्र जो विभिन्न कारणों से विद्यालय नहीं आ रहे हो। इन सभी बच्चों एवं अभिभावकों को प्रेरित करना होगा।

विद्यालय के शिक्षक अशोक आनंद बहुत उत्साहित थे। जब वह गांव में घुम रहे थे देखे कि रामु जिसकी बुद्धिलब्धी कम है यानी मंदबुद्धि है। विद्यालय आने से डर रहा है। वह अपने पिता के साथ खेतों में काम करता है। शिक्षक अशोक आनंद ने तय किया कि वह रामु को स्कूल लाने की कोशिश करेंगे।

अगले दिन शिक्षक रामु के घर गए। रामु एवं उनके पिताजी से बात करने लगे। उसने रामु के पिताजी को समझाया कि "अगर रामु पढ़ाई कर लेगा तो बड़े होकर अच्छी तरह से जीवन-यापन करने लायक हो जायेगा। खेतों में काम तो हमेशा कर सकते हो, लेकिन शिक्षा उन्हें नई दुनिया दिखाएंगी।"

रामु थोड़ा हिचकिचाया, लेकिन फिर शिक्षक अशोक आनंद उसे स्कूल दिखाने ले गए। प्रधानाध्यापक जी एवं बच्चों ने रामु का स्वागत किया और उसे मुफ्त किताबें एवं शिक्षण सामग्री प्रदान की।

शिक्षक अशोक आनंद गतिविधियों एवं शिक्षण अधिगम सामग्रियों के सहायता से पढ़ाने लगे।

रोचक पुर्ण तरीके से पढ़ाई के कारण रामु को पढ़ने में आनंद आने लगा।अब रामु उत्साहित होकर रोज स्कूल आने लगा और पढ़ाई में रुचि भी दिखाने लगा। शिक्षक की मेहनत देखकर बाकी गाँव वाले भी जागरूक हुए।

वे समझ गए कि जब रामू पढ़ सकता है तो हमारे बच्चे भी पढ़ सकते हैं।

उन्होंने अपने बच्चों को जो विभिन्न कारणों से पढ़ने में कमजोर थे या जो नहीं पढ़ना चाहते थे। उन्हें स्कूल भेजना शुरू कर दिया।

सभी तरह के बच्चे शिक्षक की सहायता से समावेशी शिक्षा ग्रहण करने लगें।

इस तरह शिक्षक अशोक आनंद की छोटी-सी कोशिश ने पूरे गाँव में शिक्षा का उजियारा फैला दिया। विद्यालय जागरूकता अभियान सफल हो गया, और बच्चों के भविष्य की एक नई रोशनी जगमगा उठी।

बिहार में सरकारी विद्यालयों के डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए टीचर्स ऑफ बिहार ने 'प्रोजेक्ट शिक्षक साथी' की शुरुआत की है। इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाएगा, जिससे शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता, पारदर्शिता और संवाद में व्यापक सुधार होगा।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1. हाल ही के एक रिपोर्ट के अनुसार भारत किस वर्ष तक दुनिया का सबसे बड़ा वेब 3 डेवलपर हब बन जाएगा?
According to a recent report, by which year will India become the world's largest Web3 developer hub?
A. वर्ष 2026 (Year 2026)
B. वर्ष 2027 (Year 2027)
C. वर्ष 2028 (Year 2028)
D. वर्ष 2029 (Year 2029)
✅ उत्तर: C. वर्ष 2028 (Year 2028)

2. हाल ही में भारतीय नौसेना का जहाज आईएनएस इम्फाल ने किस देश के 57वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में भाग लिया?
Recently, Indian naval ship INS Imphal participated in the 57th National Day celebrations of which country?
A. श्रीलंका (Sri Lanka)
B. इंडोनेशिया (Indonesia)
C. थाईलैंड (Thailand)
D. मॉरीशस (Mauritius)
✅ उत्तर: D. मॉरीशस (Mauritius)

3. हाल ही में सशस्त्र संगठन बलूच लिबरेशन आर्मी ने पाकिस्तान के किस प्रांत में एक यात्री ट्रेन का अपहरण कर लिया?
Recently, the armed organization Baloch Liberation Army hijacked a passenger train in which province of Pakistan?
A. सिंध प्रांत (Sindh Province)
B. बलूचिस्तान प्रांत (Balochistan Province)
C. पंजाब प्रांत (Punjab Province)
D. खैबर पख्तूनख्वा (Khyber Pakhtunkhwa)
✅ उत्तर: B. बलूचिस्तान प्रांत (Balochistan Province)

4. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को किस देश ने अपने सबसे बड़े नागरिक सम्मान 'द ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द स्टार एंड की ऑफ द इंडियन ओशन' से नवाजा है?
A. अमेरिका (America)
B. जापान (Japan)
C. मॉरीशस (Mauritius)
D. चिली (Chile)
✅ उत्तर: C. मॉरीशस (Mauritius)

5. हाल ही में रिलायंस जियो ने किस कंपनी के साथ सैटेलाइट से इंटरनेट प्रदान करने के लिए समझौता किया है?
A. स्टारलिंक (Starlink)
B. गूगल (Google)
C. अमेजन क्यूपर (Amazon Kuiper)
D. इनमें से कोई नहीं (None of these)
✅ उत्तर: A. स्टारलिंक (Starlink)

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

6. हाल ही में कहाँ पहला शौर्य वेदनाम उत्सव संपन्न हुआ है?
A. असम (Assam)
B. बिहार (Bihar)
C. महाराष्ट्र (Maharashtra)
D. मध्य प्रदेश (Madhya Pradesh)
✅ उत्तर: B. बिहार (Bihar)

7. हाल ही में कहाँ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माइक्रोसॉफ्ट कैंपस की आधारशिला रखी है?
A. लखनऊ (Lucknow)
B. गुरुग्राम (Gurugram)
C. नोएडा (Noida)
D. कानपुर (Kanpur)
✅ उत्तर: C. नोएडा (Noida)

8. हाल ही में कहां दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय भारतीय फिल्म अकादमी पुरस्कार (IFA) 2025 का आयोजन किया गया?
A. जयपुर (Jaipur)
B. भोपाल (Bhopal)
C. नासिक (Nashik)
D. गोवा (Goa)
✅ उत्तर: A. जयपुर (Jaipur)

9. 12 मार्च 2025 को किस दिवस के रूप में मनाया गया, जो धूम्रपान के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है?
A. विश्व तंबाकू निषेध दिवस (World No Tobacco Day)
B. धूम्रपान निषेध दिवस (No Smoking Day)
C. राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस (National Health Day)
D. सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता दिवस (Public Health Awareness Day)
✅ उत्तर: B. धूम्रपान निषेध दिवस (No Smoking Day)

10. हाल ही में 'लापता लेडीज' ने आईफा के __ संस्करण में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता।
A. 23वें (23rd)
B. 24वें (24th)
C. 25वें (25th)
D. 26वें (26th)
✅ उत्तर: C. 25वें (25th)

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

11. हाल ही में आयोजित 'सी ड्रैगन 2025' नौसैनिक अभ्यास का मुख्य उद्देश्य क्या था?
What was the main objective of the recently held 'Sea Dragon 2025' naval exercise?
A. मानवीय सहायता प्रदान करना (Providing humanitarian assistance)
B. समुद्री सुरक्षा सहयोग बढ़ाना (Enhancing maritime security cooperation)
C. आपदा प्रबंधन कौशल का विकास (Development of disaster management skills)
D. समुद्री आपूर्ति मार्गों की सुरक्षा (Security of maritime supply routes)
✅ उत्तर: B. समुद्री सुरक्षा सहयोग बढ़ाना (Enhancing maritime security cooperation)
🔹 स्पष्टीकरण: सी ड्रैगन 2025 नौसैनिक अभ्यास का उद्देश्य विभिन्न देशों के बीच समुद्री सुरक्षा को मजबूत करना था।
🔹 Explanation: The purpose of the Sea Dragon 2025 naval exercise was to strengthen maritime security cooperation among different nations.

12. हाल ही में जीवंत सांस्कृतिक उत्सव, पारंपरिक नृत्य चापचर कुट 2025 किस पूर्वोत्तर राज्य में मनाया गया?
Recently the vibrant cultural festival, traditional dance Chapchar Kut 2025 was celebrated in which northeastern state?
A. त्रिपुरा (Tripura)
B. मिजोरम (Mizoram)
C. असम (Assam)
D. मेघालय (Meghalaya)
✅ उत्तर: B. मिजोरम (Mizoram)

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1. तंत्रिका तंत्र का मुख्य कार्य क्या है?

• (A) पाचन करना
• (B) शरीर की गतिविधियों को नियंत्रित करना
• (C) रक्त संचार करना
• (D) श्वसन करना
उत्तर: (B)

2. तंत्रिका तंत्र के मुख्य भाग कौन-कौन से हैं?
• (A) मस्तिष्क और हृदय
• (B) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र और परिधीय तंत्रिका तंत्र
• (C) मांसपेशियां और हड्डियां
• (D) आंख और कान
उत्तर: (B)

3. केंद्रीय तंत्रिका तंत्र में क्या शामिल है?
• (A) मस्तिष्क और मेरूरज्जु
• (B) हृदय और फेफड़े
• (C) हड्डियां और मांसपेशियां
• (D) नसें और रक्त
उत्तर: (A)

4. मस्तिष्क का सबसे बड़ा भाग कौन सा है?
• (A) प्रमस्तिष्क (Cerebrum)
• (B) प्रमस्तिष्कीय पेंद (Cerebellum)
• (C) मध्य मस्तिष्क (Midbrain)
• (D) पोंस (Pons)
उत्तर: (A)

5. तंत्रिका कोशिका को क्या कहा जाता है?
• (A) न्यूरॉन
• (B) माइटोकॉन्ड्रिया
• (C) साइटोप्लाज्म
• (D) एंटीबॉडी
उत्तर: (A)

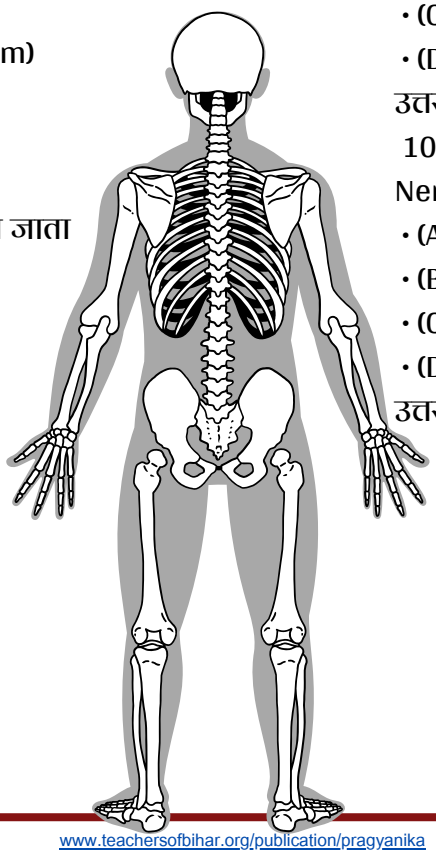

6. संदेश तंत्रिका कोशिकाओं के बीच कैसे प्रवाहित होता है?
• (A) विद्युत आवेगों के माध्यम से
• (B) रक्त प्रवाह के माध्यम से
• (C) वायु के माध्यम से
• (D) पानी के माध्यम से
उत्तर: (A)

7. स्पाइनल कॉर्ड किस संरचना में पाई जाती है?
• (A) कशेरूक स्तंभ (Vertebral Column)
• (B) खोपड़ी (Skull)
• (C) पसलियां (Ribs)
• (D) मांसपेशियां
उत्तर: (A)

8. तंत्रिका तंत्र को किसने नियंत्रित किया?
• (A) मस्तिष्क
• (B) हृदय
• (C) फेफड़े
• (D) यकृत
उत्तर: (A)

9. मस्तिष्क का वजन औसतन कितना होता है?
• (A) 500 ग्राम
• (B) 1.4 किलोग्राम
• (C) 2.5 किलोग्राम
• (D) 3 किलोग्राम
उत्तर: (B)

10. स्वायत्त तंत्रिका तंत्र (Autonomic Nervous System) का कार्य क्या है?
• (A) स्वैच्छिक कार्यों को नियंत्रित करना
• (B) रक्त संचार को नियंत्रित करना
• (C) अनैच्छिक कार्यों को नियंत्रित करना
• (D) मांसपेशियों की गति को नियंत्रित करना
उत्तर: (C)

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

Q1.भारत का अंतिम मुगल सम्राट कौन था ?

Ans- बहादुर शाह

Q2. पांचवी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य का पतन किसके आक्रमणों का परिणाम था ?

Ans- हूणों के

Q3. औरंगजेब द्वारा निर्मित एकमात्र इमारत कौन -सी थी ?

Ans- फतेहपुर सीकरी में जामा मस्जिद

Q4. तराइन का द्वतीय युद्ध कब हुआ था?

Ans- 1192 ई.

Q5.भारत में पुर्तगाली शासन की स्थापना किसने की ?

Ans- अल्फांसो डी अल्बुकर्क

Q6. प्लासी की लड़ाई (1757 ई.) क्लाइव और उसकी फौजों द्वारा किस मुख्य कारण से जीती गई ?

Ans- मीरजाफर और रायदुर्लभ की गद्दारी के कारण

Q7. 1857 की क्रांति में अंग्रेजों ने कुछ नेताओं को रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया क्या यह कथन सत्य है?

Ans- नहीं

Q8. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी?

Ans- 1885 ई.

Q9. महान क्रन्तिकारी झाँसी की रानी युद्ध के मैदान में वीरगति को कब प्राप्ति हुई थी?

Ans- 1857 ई में

Q10. ब्रम्हा समाज आंदोलन के प्रवर्तक कौन थे ?

Ans- राजा राममोहन राय

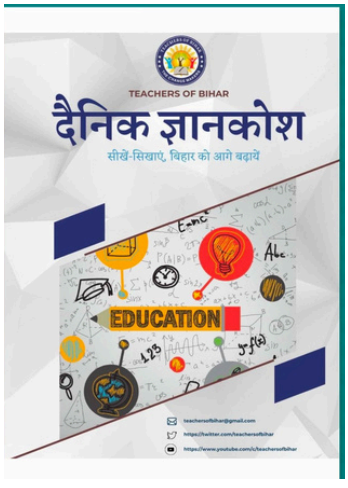

टीचर्स ऑफ बिहार* द्वारा प्रकाशित *"दैनिक ज्ञानकोश"* पत्रिका बिहार के शिक्षकों एवं छात्र/छात्राओं के शैक्षिक बेहतरी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसमें सम्मिलित सामग्री शिक्षकों को उत्कृष्ट शिक्षण में मदद करती है और छात्र/छात्राओं के ज्ञान को व्यापक बनाती है। आइए, हम सब मिलकर इस अनूठे प्रयास का हिस्सा बनकर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा दें।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

जंतर-मन्तर का निर्माण किसने किया था? –
महराजा जयसिंह ने

महात्मा गाँधी अपना राजनीतिक गुरू किन को मानते थे? –
गोपालकृष्ण गोखले
साइमन कमीशन पहली बार भारत कब आया था? –
3 फरवरी, 1928
कांग्रेस पार्टी ने किस वर्ष "पूर्ण स्वराज" का प्रस्ताव पारित किया था? –
1929
वर्ष 1919 भारतीय इतिहास से सम्बंधित है –
जालियाँवाला बाग़ त्रासदी
"वन्दे मातरम" गीत किसकी रचना है? –
बंकिम चन्द्र चटर्जी
अलग पाकिस्तान देश के लिए आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था? –
मुहम्मद अली जिन्ना ने
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई? –
1885

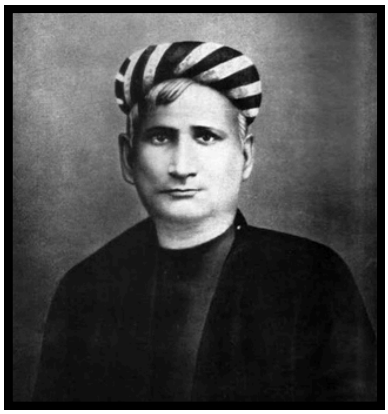

कौन-से प्रसिद्ध भारतीय नेता "सीमान्त गाँधी" के रूप में जाने गये? –
खां अब्दुल गफ्फार खां
द्वितीय विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन का प्रधानमंत्री कौन था? –
विन्सटन चर्चिल
टीपू सुलतान ने अपनी राजधानी कहाँ बनवाई? –
श्रीरंगपट्टनम में
"इंडिया विन्स फ्रीडम" के लेखक कौन हैं? –
अबुल कलाम आजाद
"लाइफ डिवाइन" नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं? –
अरविन्द घोष
महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी नियुक्त किस वर्ष किया गया? –
1858
कला की गांधार शैली किसके शासनकाल में फली-फूली?
कुषाणों के समय

सिन्धु सभ्यता किस काल में पड़ता है? –
प्रागैतिहासिक काल
800 से 600 ई.पू. का काल किस युग से जुड़ा है? –
उत्तरवैदिक कालीन
संस्कृति का युग जिस समय में ब्राह्मण संस्कृति का बोलबाला था.
बोगाज कोई का महत्त्व इसलिए है कि –
वहाँ जो अभिलेख प्राप्त हुए हैं उनमें वैदिक देवी एवं देवताओं का वर्णन मिलता है.
गायत्री मन्त्र किस पुस्तक में लिखा मिलता है –
ऋग्वेद
संगम युग में उरइयूर किस लिए विख्यात था? –
कपास के व्यापार का महत्त्वपूर्ण केंद्र

प्रथम अंक को इतना प्यार देने के लिए आभार

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'प्रज्ञानिका' का भव्य विमोचन भुवनेश्वर और गुवाहाटी में

शिक्षकों के नवाचारों, शोध और विचारों को राष्ट्रीय पहचान देने का मंच है प्रज्ञानिका

मौर्य ध्वज एक्सप्रेस, पटना।

पटना। टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'प्रज्ञानिका' का विमोचन 26 फरवरी 2025 को एक भव्य कार्यक्रम में भुवनेश्वर और गुवाहाटी दोनों स्थानों पर किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर बिहार के शिक्षकों द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका का विमोचन पहले क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर में हुआ उसके बाद सीसीआरटी, गुवाहाटी में भी इस पत्रिका का विमोचन किया गया। इन दोनों कार्यक्रमों ने पूरे शैक्षिक समुदाय में एक नई ऊर्जा का संचार किया और यह बिहार तथा अन्य राज्यों के शिक्षकों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया।

भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम.....

भुवनेश्वर में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर के प्राचार्य पी.सी.अग्रवाल सर ने कार्यक्रम की शुरूआत की। इस अवसर पर डॉ. अरुप कुमार साहा, प्रोफेसर एल. बेहरा सर, और डॉ. रत्ना घोष ने 'प्रज्ञानिका' पत्रिका के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. अरुप कुमार साहा ने कहा कि "प्रज्ञानिका, बिहार के शिक्षकों का गौरव है। यह पत्रिका न केवल बिहार के शिक्षकों के योगदान को सम्मानित करती है बल्कि भारतीय शिक्षा जगत में एक नई दिशा और पहचान स्थापित करेगी। पत्रिका की प्रधान संपादिका निधि चौधरी ने भी कार्यक्रम में पत्रिका के विषय-वस्तु और दिशा-निर्देशों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमारे द्वारा प्रकाशित 'प्रज्ञानिका' बिहार के शिक्षकों की उपलब्धियों और उनकी यात्रा को साझा करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पत्रिका न सिर्फ शैक्षिक संदर्भों को लेकर मार्गदर्शन प्रदान करेगी बल्कि शिक्षक समुदाय के आपसी विचार-विमर्श और सहयोग को भी प्रोत्साहित करेगी जो बिल्कुल निःशुल्क है।

गुवाहाटी में आयोजित कार्यक्रम.....

गुवाहाटी में सीसीआरटी के एक भव्य कार्यक्रम में 14 राज्यों के प्रतिभागियों की उपस्थिति में संस्थान के आदरणीय परामर्शक महोदय निरंजन भुयान द्वारा "प्रज्ञानिका" पत्रिका का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम में निरंजन भुयान ने प्रज्ञानिका पत्रिका की महत्ता पर प्रकाश डाला और इसे शिक्षा क्षेत्र में एक नई दिशा देने वाला कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने की दिशा में काम करेगी बल्कि यह विभिन्न राज्यों के बीच विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

इस अवसर पर सीसीआरटी के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण और शिक्षा क्षेत्र के प्रमुख व्यक्तित्व भी उपस्थित थे जिन्होंने इस पहल की सराहना की और इसके भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम में उपस्थित 14 राज्यों के प्रतिभागियों ने भी प्रज्ञानिका पत्रिका के उद्देश्यों और इसके लाभों पर विचार किए और इसे शिक्षा क्षेत्र के लिए एक क्रांतिकारी कदम बताया।

प्राचार्य ने की सराहना.....

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर के प्राचार्य ने प्रज्ञानिका के प्रयासों की सराहना की और सम्पादक महोदया निधि चौधरी और उनकी टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह मंच बहुत ज्यादा खर्चीला भी नहीं है और एक क्लिक में सभी के पास उपलब्ध हो जाएगा। यह न केवल लर्निंग का बल्कि प्रमोशन के लिए भी अच्छा अवसर है। इस प्रकार के प्रयासों से बहुत से लोगों को जोड़ा जा रहा है।

उन्होंने प्रज्ञानिका के नाम की भी सराहना की, जिसे अद्भुत बताया और कहा कि यह नाम अपने आप में ज्ञान का प्रतीक है। यह सबको ज्ञानवान बनाएगा और ऊर्जावान बनाएगा। इसके संचरण से आगे के दिशा में विकास होगा।

एक ऐतिहासिक पहल.....

दोनों कार्यक्रमों ने यह सिद्ध कर दिया कि जब शिक्षकों को प्रेरणा और सही दिशा मिलती है तो वे समाज के लिए वास्तविक परिवर्तन का स्रोत बन सकते हैं।

'प्रज्ञानिका' न केवल बिहार के शिक्षकों का सम्मान बढ़ाने का कार्य करेगा बल्कि यह एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा और आने वाले समय में शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाएगा। टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने बताया कि लोकार्पण के बाद पत्रिका की पहली प्रति से शिक्षकों को अवगत कराया गया और यह भी बताया गया कि कैसे लोग इस पत्रिका के साथ जुड़ सकते हैं और इसके माध्यम से अपनी शैक्षिक सफलता और नवाचारों को साझा कर सकते हैं। इस पहल के बाद यह उम्मीद जताई जा रही है कि पूरे देश में शिक्षा के क्षेत्र में एक नई ऊर्जा और जागरूकता का संचार होगा।

---

epaper
हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

त्रैमासिक पत्रिका प्रज्ञानिका के सफल विमोचन पर हर्ष

- टीचर्स ऑफ बिहार के प्रज्ञानिका पत्रिका टीम की हुई बैठक
- बैठक में शामिल हुए विभिन्न जिलों के शिक्षक-शिक्षिकाएं

समस्तीपुर, नगर संवाददाता। टीचर्स ऑफ बिहार के प्रज्ञानिका पत्रिका की टीम की ऑनलाइन मीटिंग बुधवार की देर शाम आयोजित हुई। टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार के संयोजन में आयोजित मीटिंग में बिहार के विभिन्न जिलों के शिक्षक-शिक्षिकाएं शामिल हुए।

इस दौरान त्रैमासिक पत्रिका प्रज्ञानिका के सफल विमोचन पर हर्ष प्रकट किया गया। साथ ही पत्रिका के अगले अंक का प्रकाशन ससमय करने तथा पत्रिका को अधिक से अधिक लोगों तक प्रसारित करने पर विस्तृत चर्चा की गई। वहीं प्रज्ञानिका त्रैमासिक पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को शीघ्र व सफल प्रकाशन के लिए बधाई दी गई। बैठक को टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार, प्रज्ञानिका पत्रिका के संपादक निधि चौधरी, शिवेंद्र प्रकाश सुमन, केशव कुमार, शिक्षक गगन कुमार, रितुराज जयसवाल, रिजवाना यासमीन सहित अन्य ने संबोधित किया। मीटिंग में खुशबू कुमारी, सिकेन्द्र कुमार सुमन, मुकेश कुमार मृदुल, मृत्युंजय ठाकुर, डॉ मनीष कुमार शाही, मधु प्रिया, मृदुला भारती, अनुपमा, मो नसीम अख्तर, मनीष कुमार, वंदना, सुरेश कुमार, संजय कुमार, रवि शर्मा, रंजेश सिंह, पुष्पा प्रसाद सहित अन्य शामिल थे।

DM Munger
1d ·

नि:शुल्क उपलब्ध होगी पुस्तक, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोग लाभ उठा सकेंगे

शिक्षकों की ई-पत्रिका प्रज्ञानिका का विमोचन

भास्कर न्यूज | बरियारपुर

टीचर्स ऑफ बिहार के तत्वावधान में बिहार के शिक्षकों द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका प्रज्ञानिका का विमोचन क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान में हुआ। मुंगेर जिला मेंटर मुदित कुमार ने कहा कि इससे शिक्षकों में उत्साह बढ़ा है।

कार्यक्रम की शुरुआत क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर के प्रधानाचार्य पीसी अग्रवाल ने की। प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर डॉ. अरुण कुमार साहा, प्रोफेसर एल. बेहरा और डॉ. श्रीमती रत्ना घोष ने कहा कि प्रज्ञानिका बिहार के शिक्षकों का गौरव है। यह पत्रिका शिक्षकों के योगदान को सम्मानित करेगी। भारतीय शिक्षा जगत में नई पहचान स्थापित करेगी। टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार ने कहा कि प्रज्ञानिका बिहार ही नहीं,

पत्रिका विमोचन मे शामिल अतिथि व शिक्षक।

बनाएगा। यह पूरी तरह नि:शुल्क होगी। हर शिक्षक और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोग इसका लाभ उठा सकेंगे। इसका उद्देश्य शिक्षकों को जागरूक और प्रेरित करना है। पत्रिका की प्रधान संपादिका निधि

किया। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका बिहार के शिक्षकों की उपलब्धियों और उनकी यात्रा को साझा करने का प्रयास है। यह शैक्षिक मार्गदर्शन देगी। शिक्षक समुदाय के आपसी विचार-विमर्श और सहयोग को भी

प्रज्ञानिका

दैनिक भास्कर

मुंगेर 27-02-2025

नि:शुल्क उपलब्ध होगी पुस्तक, शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोग लाभ उठा सकेंगे

शिक्षकों की ई-पत्रिका प्रज्ञानिका का विमोचन

भास्कर न्यूज | बरियारपुर

टीचर्स ऑफ बिहार के तत्वावधान में बिहार के शिक्षकों द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका प्रज्ञानिका का विमोचन क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान में हुआ। मुंगेर जिला मेंटर मुदित कुमार ने कहा कि इससे शिक्षकों में उत्साह बढ़ा है।

कार्यक्रम की शुरुआत क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर के प्रधानाचार्य पीसी अग्रवाल ने की। प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर डॉ. अरुण कुमार साहा, प्रोफेसर एल. बेहरा और डॉ. श्रीमती रत्ना घोष ने कहा कि प्रज्ञानिका बिहार के शिक्षकों का गौरव है। यह पत्रिका शिक्षकों के योगदान को सम्मानित करेगी। भारतीय शिक्षा जगत में नई पहचान स्थापित करेगी। टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार ने कहा कि प्रज्ञानिका बिहार ही नहीं,
पूरे भारत में अपनी पहचान

पत्रिका विमोचन मे शामिल अतिथि व शिक्षक।

बनाएगा। यह पूरी तरह नि:शुल्क होगी। हर शिक्षक और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोग इसका लाभ उठा सकेंगे। इसका उद्देश्य शिक्षकों को जागरूक और प्रेरित करना है। पत्रिका की प्रधान संपादिका निधि
चौधरी ने मुख्य पृष्ठ का वितरण

किया। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका बिहार के शिक्षकों की उपलब्धियों और उनकी यात्रा को साझा करने का प्रयास है। यह शैक्षिक मार्गदर्शन देगी। शिक्षक समुदाय के आपसी विचार-विमर्श और सहयोग को भी
बढ़ावा देगी।

प्रथम अंक को इतना प्यार देने के लिए आभार

डिजिटल दुनिया

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

National Digital Library of India (NDLI)

NDLI भारत सरकार द्वारा विकसित एक निःशुल्क डिजिटल पुस्तकालय है, जो छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए लाखों शैक्षिक संसाधन प्रदान करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- ✅ निःशुल्क अध्ययन सामग्री – NCERT, CBSE, BSEB, IGNOU, IITs और अन्य संस्थानों की पुस्तकें, नोट्स और शोध पत्र।
- ✅ स्कूल से उच्च शिक्षा तक – कक्षा 1 से लेकर स्नातकोत्तर और शोध स्तर तक के लिए उपयोगी।
- ✅ मल्टी-फॉर्मेट कंटेंट – टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो, इमेज, लेक्चर नोट्स आदि।
- ✅ भाषा विकल्प – हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध।
- ✅ कहीं भी, कभी भी पढ़ाई करें – मोबाइल, टैबलेट या कंप्यूटर पर।

NDLI का उपयोग कैसे करें?

1. वेबसाइट पर जाएं – NDLI की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।
2. पंजीकरण करें – गूगल, फेसबुक या ईमेल से लॉगिन करें।
3. सामग्री खोजें – विषय, कक्षा या कोर्स के अनुसार।
4. डाउनलोड करें – अध्ययन सामग्री को ऑफलाइन उपयोग के लिए सेव करें।

SWAYAM ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://ndl.iitkgp.ac.in/

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL)

NPTEL भारत सरकार के MHRD और IITs द्वारा विकसित एक निःशुल्क ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म है, जो इंजीनियरिंग, विज्ञान और प्रबंधन से संबंधित उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- ✅ IITs और IISc द्वारा तैयार पाठ्यक्रम – इंजीनियरिंग, विज्ञान, गणित, प्रोग्रामिंग और प्रबंधन के लिए।
- ✅ निःशुल्क वीडियो लेक्चर – उच्च गुणवत्ता वाले व्याख्यान और नोट्स।
- ✅ स्व-पुस्तक अध्ययन सामग्री – स्वयं सीखने के लिए इंटरएक्टिव कोर्स।
- ✅ उद्योग आधारित कौशल विकास – कंपनियों के साथ मिलकर तैयार किए गए पाठ्यक्रम।
- ✅ प्रमाण पत्र (परीक्षा शुल्क अलग से) – कोर्स पूरा करने के बाद प्रमाण पत्र प्राप्त करें।

NPTEL का उपयोग कैसे करें?

1. वेबसाइट पर जाएं – NPTEL की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।
2. निःशुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएं।
3. कोर्स खोजें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।
4. पढ़ाई शुरू करें – वीडियो लेक्चर देखें और सामग्री डाउनलोड करें।

NPTEL ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://nptel.ac.in/

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

eGyanKosh

eGyanKosh भारत के IGNOU (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) द्वारा विकसित एक ओपन लर्निंग प्लेटफॉर्म है, जहां शिक्षकों और छात्रों के लिए विभिन्न विषयों की नि:शुल्क अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ IGNOU और अन्य विश्वविद्यालयों की सामग्री – बीए, एमए, बीएससी, एमएससी, बीकॉम, एमकॉम, बीएड, एमएड आदि।

✅ नि:शुल्क डाउनलोड और एक्सेस – अध्ययन सामग्री मुफ्त उपलब्ध।

✅ स्व-अध्ययन पाठ्यक्रम – किसी भी समय पढ़ाई के लिए डिज़ाइन किए गए कोर्स।

✅ प्रतियोगी परीक्षा के लिए उपयोगी – UPSC, SSC, बैंकिंग और अन्य परीक्षाओं के लिए अध्ययन सामग्री।

✅ भाषा विकल्प – हिंदी और अंग्रेजी में कोर्स उपलब्ध।

eGyanKosh का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएं – eGyanKosh पोर्टल खोलें।

2️⃣ नि:शुल्क ब्राउज़ करें – विषय और कोर्स के अनुसार अध्ययन सामग्री खोजें।

3️⃣ डाउनलोड करें – पीडीएफ या अन्य फॉर्मेट में अध्ययन सामग्री सेव करें।

4️⃣ स्व-अध्ययन करें – अपने समयानुसार पढ़ाई करें।

eGyanKosh ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://egyankosh.ac.in/

मधुबनी चित्रकला

श्रद्धा झा
केशव दास कला
महाविद्यालय दरभंगा

मधुबनी चित्रकला जिसे मिथिला पेंटिंग के नाम से मी जाना जाता है 'बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र की एक प्राचीन और प्रसिद्ध लोककला है। यह कला अपनी जीवंत रंगों ज्यामितीय आकृतियों और धार्मिक तथा सांस्कृतिक विषयों के लिए प्रसिद्ध है। यह कला मुख्य रूप से महिलाएं और अपने घरों की दीवारों और आंगनों पर बनाती थीं, लेकिन अब अह कागज़, कपड़े साड़ियों और अन्य वस्त्रों पर भी बनाई जाती है।

इतिहास और उत्पत्ति :-

मधुबनी चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना है। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान राम और माता सीता का विवाह हो रहा था, तब जनकपुर (मिथिला) के राजा जनक ने विवाह समारोह के लिए पूरे नगर को सजाने का श्रदिश दिया। तभी से महिलाओं ने दीवारों और आंगनों पर सुंदर चित्रकारी करना शुरू किया जो आगे चलकर मधुबनी चित्रकला के रूप में प्रसिद्ध हुई।

प्रमुख विशेषताएँ

विषय-वस्तु :- मधुबनी चित्रकला में धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित चित्र बनाए जाते हैं, जैसे- राम-सीता विवाह राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गणेश आदि। इसके अलावा प्रकृति, पशु-पक्षी और सामाजिक जीवन को भी चित्रित किया जाता है।

रंगों का प्रयोग :- इस कला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। हल्दी से पीला, फूलों से लाल, पत्तियों से हरा और कोयले से काला रंग बनाया जाता है।

रेखाओं का महत्व :-

मधुबनी चित्रकला में चित्रों की रूपरेखा मोटी काली रेखाओं से बनाई जाती हैं और चित्रों में कोई स्थान बाकी नहीं छोड़ा जाता ।

हस्तनिर्मित कला :-

यह पूरी तरह से हाथ से बनाई जाने कला है। कलाकार ब्रश, तिनके या अंगुलियों का प्रयोग करके चित्र बनाते है।

वर्तमान समय में मधुबनी कला :-

आज मधुबनी चित्रकला ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना ली है। यह कला अब साडियों, सजावट की वस्तुओं और पेंटिंग्स के रूप में भी बनाई जाती है। कलाकार इसे व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी आजीविका चला रहे हैं।

धुबनी चित्रकला भारत की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। यह न केवल कला प्रेमियों को आकर्षित करती है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध परम्पराओं को भी दर्शाती है। हमे इस कला को संरक्षित करने और इसे आगे बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए ताकि यह विरासत अपने आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके ।

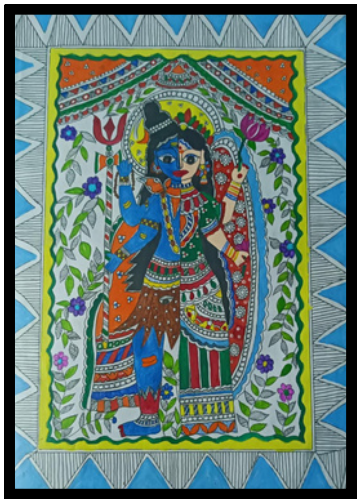

राष्ट्रीय भेषज विज्ञान शिक्षा दिवस

शिक्षा कृत संकल्प लें,
चिकित्सा सा विकल्प लें,
औषधि ज्ञान हित में,
दिवस मनाइए।
रोग मुक्ति बोध पले,
शुचिता के भाव तले,
जन मन स्वस्थ मिले,
ज्ञान को बढ़ाइए।
औषधी का संरक्षण,
पहचान विश्लेषण,
संयोजन प्रमापण,
निर्माण पढ़ाइए।
औषध निर्माण यह,
भेषज विज्ञान यह,
जनहित कृत यह,
जागृत कराइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

नई सुबह

जागो जागो हुई सुबह
फिर से आई नई सुबह
चिड़ियां गाए फूल खिले
है मुस्काई नई सुबह....।।

उठकर प्रभु को प्रणाम करो
फिर अपने सारे काम करो
शाति से बीते जीवन
सारे अच्छे काम करो...।।

पढ़ने लिखने का ये समय
आगे बढ़ने का ये समय
कुर्बां देश पे हो, इतिहास
स्वर्णिम गढ़ने का ये समय..।।

डॉ स्वराक्षी स्वरा
खगड़िया,बिहार

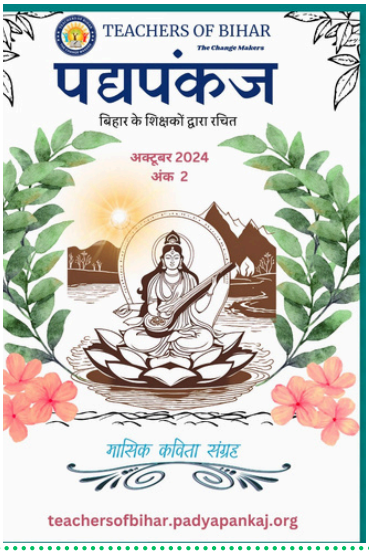

टीचर्स ऑफ बिहार की एक बेहतरीन प्रस्तुति पद्य पंकज। जिसमे आप सभी शिक्षक अपने मन की मोतियों को पिरोकर साहित्यिक माला स्वयं निर्मित कर सकतें हैं। जरूर पढ़िए पद्य पंकज शिक्षकों की एक से बढ़ कर एक रचनाएँ।

प्रजनन

वो जैवप्रक्रिया जिसमें हो
अपने जैसे जीवों का सृजन।
जंतुओं में या पौधों में हो,
कहलाता है बच्चो प्रजनन।।

खंडन, विखंडन, स्पोर, मुकुलन,
पुनर्जनन और कायिक प्रवर्धन।
बिना जनन कोशिकाओं के रचन,
जनन कहलाते अलैंगिक जनन।।

अगुणित युग्मकों का सृजन,
जो करते हों आपस में संलयन।
बनाते युग्मनज कर के निषेचन,
जनन, कहलाते लैंगिक जनन।।

कहीं पुंकेसर स्त्रीकेसर निःसंग,
कहीं एक फूल में दोनों संलग्न।
फूल ही होते पादप जनन अंग,
परिपक्व होकर करते प्रजनन।।

परागकणों का परागकोष से,
वर्तिकाग्र पर जाना है परागण।
होकर वर्तिका से अंडाशय में,
होता है पराग का आगमन।।

हवा और बारिश के संग,
करने पराग का स्थानांतरण।
कीट, पतंग, पक्षी, मानव को,
देते रस रंग रूप से आमंत्रण।।

बीजाणु संग अंडकोशिका,
करते हैं बीजों को उत्पन्न।
अंडाशय है फल बन जाता ,
देने जीवों को भरपूर पोषण।।

होता ऐसे प्रजनन पौधों में,
करना पढ़ कर थोड़ा चिंतन।
दल और बाह्यदल के गुच्छे,
गिरते अपनों से कर विलगन।

ओम प्रकाश
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय दखली टोला,
भागलपुर

काश!सबके किस्मत मे होता

सबके किस्मत मे नही होता
दाढ़ी की बनाई आचार चट करना
और फिर मुस्कुराकर उनके पीछे छिप जाना

सबके किस्मत मे नही होता
दादू के कंधे पर बैठकर कान्हा बन इतराना
और खुद को बड़ा बताना

सबके किस्मत मे नही होता
खेतों के टेड़े मेढे मेड़ पर दौड़ लगाना
और जन्माष्टमी पर
सबसे ऊँचे पेड़ पर झूला लगाकर झूलना

सबके किस्मत मे नही होता
टपकते छत से पानी को गिरते देखना
और दादी माँ की गोद से
चिपककर कहानी सुनाने को मचलना

सबके किस्मत मे नही होता
बरसात मे छतरी छोड़ भींगना
और बीमार पड़ जाने की प्रार्थना करना
और ब्रेड बिस्कुट मिल जाने की दुहाई करना

सबके किस्मत मे नही होता
बाबू जी का सिर पर हाथ फेरना
और कुछ न कहना और सब कुछ मिल जाना

सबके किस्मत मे नही होता
माँ के हाथ के तवे की गर्म रोटियां खाना
और भाई बहनों से हार-जीत लगाना

सबके किस्मत मे नही होता
आम के बगीचे मे जाना
और चोरी चोरी!
माली काका की नजरों से बचकर आम चुराना

सबके किस्मत मे नही होता
गर्मियों की छुट्टी मे नानी घर जाना
और अपनी शरारतों से
नानी की ममता का परीक्षा लेना

सबके किस्मत मे नही होता
काश!सबके बचपन मे यह हिस्सा होता
दुनिया इन्हें कितना मनभावन लगता!

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर,
बेगूसराय

बोर्ड परीक्षा के बाद बच्चों का भविष्य

भवानंद सिंह
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

फरवरी से मार्च महीने तक विभिन्न बोर्ड की परीक्षाएं आयोजित की जाती है। जैसे बिहार बोर्ड की 10वीं एवं 12वीं की परीक्षा तथा सीबीएसई बोर्ड की 10वीं एवं 12वीं की परीक्षा आदि। ऐसे में बच्चे, बच्चे के अभिभावकों तथा शुभचिंतकों तथा उनके माता-पिता काफी चिंतित रहते हैं की इन बोर्ड परीक्षाओं के बाद बच्चे क्या करे । यह स्वाभाविक भी है क्योंकि इन परीक्षाओं पर छात्र-छात्रा का भविष्य निर्भर करता है। देखा जाता है कि जो बच्चे अच्छे नंबरों से सफलता प्राप्त करते हैं, उसे अच्छा अथवा पढ़ने वाला छात्र माना जाता है। बाकी बच्चों को सामान्य छात्र की श्रेणी में रखा जाता है। जबकि नंबर किसी की योग्यता को मापने का आधार नहीं होना चाहिए। कभी-कभी पढ़ने में अच्छे छात्रों को भी विभिन्न कारणों से कम नंबर आ जाता है। इसका मतलब यह कदापि नहीं कि वह छात्र पढ़ने में अच्छा नहीं है।

इन परीक्षाओं के बाद छात्र-छात्रा एवं उनके माता-पिता दोनों के मन में यह चिंता रहता है कि उनके बच्चे क्या पढ़े,कहां पढ़ें,कौन सी फैकल्टी चुने आदि। अभिभावक अपने बच्चों से काफी अपेक्षा रखते हैं और अपने हैसियत के अनुसार कोचिंग संस्थानों का चुनाव करते हैं। यह संस्थान पटना, कोटा तथा अन्य जगहों का भी हो सकता है। इन महंगे कोचिंग संस्थानों में रखकर बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं, उनके बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर तथा अन्य अच्छी सेवाओं में जाकर मान-सम्मान कमा सके और आर्थिक परेशानी से छुटकारा पा सके एवं माता-पिता तथा समाज की सेवा कर सके।

अधिकतर अभिभावक बच्चों पर बेवजह दबाव बनाते रहते हैं। अपनी इच्छा बच्चों पर थोपते हैं कि तुम्हें इन बोर्ड परीक्षा के बाद कोटा जाना है। अच्छे डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनना है और हमारे सपनों को साकार करना है। ऐसे में बच्चों को मैथ्स अथवा जीव विज्ञान पढ़ने में रुचि न भी हो तो माता-पिता का मन रखने के लिए उसे उक्त विषय पढ़ना पड़ता है। जब बच्चे दबाव में ही सही उक्त विषय को लेकर आगे बढ़ते हैं तो उसे वह विषय कठिन लगने लगता है। इससे बच्चे मानसिक रूप से परेशान रहने लगते हैं। वह किं कर्तव्य विमूढ़ हो जाते हैं। उसे समझ में नहीं आता है कि वह क्या करें क्या ना करें। उसे आगे गड्ढा पीछे खाई नजर आने लगता है। धीरे-धीरे बच्चे कमजोर होने लगता है। यहां तक कि कई बच्चे डिप्रेशन का शिकार हो जाता है और किसी अनहोनी घटना को अंजाम तक दे देते हैं। जैसा कि बीते दिनों कोटा में ऐसे कई घटनाओं की बातें सामने आई है। यहां मैं यह कहना चाहता हूं कि जीवन अनमोल है उसे बचाइए। इस प्रकार बेवजह दबाव डालकर उसे बर्बाद ना होने दें। बच्चे आपके हैं,सोचना आपको है। उसे सजाना है या बर्बाद करना है। जीवन बचेगा तो बच्चे मैच्योर होकर अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे और अपना भविष्य बना लेंगे।

बच्चों को समझे

यहां मैं बच्चों के अभिभावक एवं उनके माता-पिता को एक सलाह दूंगा कि वह बोर्ड परीक्षाओं के बाद अपने बच्चों से बात करें। उनकी राय अथवा इच्छा जानें कि उन्हें क्या पढ़ना अच्छा लगता है- जैसे गणित, साइंस, आर्ट्स,कॉमर्स आदि।

यहां मैं बच्चों के अभिभावक एवं उनके माता-पिता को एक सलाह दूंगा कि वह बोर्ड परीक्षाओं के बाद अपने बच्चों से बात करें। उनकी राय अथवा इच्छा जानें कि उन्हें क्या पढ़ना अच्छा लगता है- जैसे गणित, साइंस, आर्ट्स,कॉमर्स आदि। इस प्रकार बच्चों पर दबाव न बनाते हुए उसे उक्त फैकल्टी में से कोई एक चुनने का मौका दें। उसे समझाएं और उसका उत्साहवर्धन करें कि मैं उनके साथ हूं । वह जो चाहे अपनी इच्छा अनुसार फैसला ले सकते हैं, ताकि बच्चे को लगे कि उनके माता-पिता का सपोर्ट उनके साथ है। ऐसा करने से बच्चे की इच्छा शक्ति मजबूत होगी और वह खुशी-खुशी अपने लक्ष्य की ओर मजबूती से आगे बढ़ पाएगा। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो समय और धन दोनों बर्बाद होगा तथा अपेक्षित परिणाम भी नहीं मिलेगा। इसलिए आप अपने बच्चों का दोस्त बनकर रहें। उसे इस खुले एवं नीले आसमान के नीचे उड़ने दें और अपना करियर बनाने दें। इसी में सबकी भलाई है।

फैकल्टी कोई भी हो विज्ञान, कला और वाणिज्य सभी के अपने-अपने फायदे हैं। सभी फैकल्टी में करियर बनाने की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। अगर कोई विद्यार्थी विज्ञान गणित के साथ पढ़ता है तो इसमें करियर बनाने की कई संभावनाएं हैं। ऐसे विद्यार्थी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। जैसे - आईआईटी, आईआईआईटी, एन आई टी, बीसीए, बीटेक, एमटेक, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर इंजीनियर आदि।

यदि आप रसायन विज्ञान भौतिक विज्ञान के साथ जीव विज्ञान पढ़ते हैं तो आप चिकित्सा के क्षेत्र में जा सकते हैं। इसमें एलोपैथिक के साथ-साथ होम्योपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा शामिल है। इसके अलावा बीडीएस, पशु चिकित्सा, फिजियोथैरेपी चिकित्सा, पारामेडिकल कोर्स, बीएससी नर्सिंग, लैब टेक्नीशियन आदि को अपना करियर बना सकते हैं।

अगर विद्यार्थी वाणिज्य स्ट्रीम को चुनते हैं तो आप सीए, बिजनेस, फाइनेंस, अकाउंटिंग के लिए योग्य होते हैं। वाणिज्य स्ट्रीम के साथ आगे बढ़ने से आप बैंकिंग, मैनेजमेंट, मार्केटिंग और अन्य कई सरकारी नौकरी में जा सकते हैं। वाणिज्य विषय में आप शिक्षक एवं प्रोफेसर भी बन सकते हैं। वाणिज्य की पढ़ाई करने के बाद टैक्स कंसल्टेंट, टैक्स ऑडिटर, पीओ आदि में से किसी एक सेवा का चुनाव कर सकते हैं। इन सब सेवाओं में अच्छी-खासी सैलरी के साथ-साथ मान सम्मान भी बढ़ जाता है।

विद्यार्थी की अभिरुचि अगर आर्ट्स पढ़ने में है तो संभावनाओं की कमी नहीं है। अगर आप 12वीं के बाद आर्ट्स विषय से ऑनर्स कर लेते हैं तो आप सभी प्रकार की प्रशासनिक सेवाओं को अपना करियर बना सकते हैं। जैसे यूपीएससी, बीपीएससी एवं विभिन्न राज्यों का राज्य स्तरीय प्रशासनिक सेवा को भी अपना करियर बना सकते हैं । आप बीएड एमएड कर शिक्षक बन सकते हैं। कला के क्षेत्र में जा सकते हैं। एम ए एवं पीएचडी करके आप किसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बन सकते हैं। यहां एक बात बताना जरूरी है कि आर्ट्स सब्जेक्ट्स में जो भी अपॉर्चुनिटी है वह साइंस और वाणिज्य पढ़ने वाले बच्चों के लिए भी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सभी विषयों में अपार संभावनाएं मौजूद है। विद्यार्थी अपने आप को आँकें और पूरी लगन एवं मेहनत से तैयारी में लग जाएँ। छोटी-छोटी असफलता से निराश ना हों। असफलताओं से सीखें।

माँ

नाम- शिल्पी
विद्यालय- पीएम श्री मध्य विद्यालय सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

मजदूर की माँ की दोनों आँखें नहीं है.
वो अपनी पहली कमाई से माँ के लिए लाल साड़ी लेना चाहता है। लेकीन फिर उसने सोचा, माँ को कहाँ दिखाई देनें वाला है कि साड़ी लाल है, पीली है, या सफेद।
माँ को श्रृंगार करना बहुत पसंद था। उसे आज भी याद है, जब वो छोटा था माँ को खूब श्रृंगार करते देखता। माँ सावन में ढ़ेर सारी हरी-हरी चूड़ियां पहना करती थी। जब वो आटा गूंथा करती, सब्जियों को भुना करती, तब उनकी चूड़ियां खूब खनकती थीं। आज पिता जी को गुजरे हुए 17 बरस हो गए। तब से माँ को कोई श्रृंगार करते नहीं देखा। सो चूड़ियां भी नहीं दे सकता। तय हुआ कि वह माँ के हाथों में पैसे ही रख देगा। अहले सुबह वह काम पर निकल गया। शाम तक खून सूखा देने वाली मेहनत कर अपनी पहली कमाई ले कर घर आया।

माँ सिकुड़ कर बिस्तर पर लेटी थी।
छू कर देखा तो शरीर ठंडा पड़ा था। माँ ने विदा ले ली थी।

बेटा आँखों में अश्रु और हाथों में कमाई लिए एकटक देख रहा था। माँ शायद देख रही थी बेबसी बेटे की, बिना आँखों के।

कौन महान

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
धनुषी, केवटी, दरभंगा

एक जंगल में बांसों का झुरमुट था एवं उसके पास ही आम का पेड़ भी था। बांस काफी ऊंचा था, आम छोटा। एक दिन बांस ने कहा -- " देखते नहीं, मैं कितना बड़ा हो चला , कितनी तेजी से बढ़ा और एक तुम हो जो इतनी आयु होने पर भी अभी छोटे ही बने हुए हो।" आम ने बांस के सौभाग्य को सराहा, पर अपनी स्थिति पर भी असंतोष व्यक्त नहीं किया। समय बीतता गया। बांस पककर सूख चला , किंतु आम की डालियां फलों से लदी और वे अधिक झुक गई।

बांस फिर इठलाया- " देखते नहीं मैं सुनहरा हो चला और बिना पत्तियों के भी दूर - दूर से कितना सुंदर दिखता हूं। एक तुम हो कि जिसे फलों से लदने पर भी नीचा देखना पड़ रहा है।" आम ने फिर भी अपने संबंध में कुछ नहीं कहा। बांस की सराहना भर उसने कर दी। एक दिन यात्रियों का एक झुंड वहां पर आया और ठहरने के लिए आश्रय की तलाश की , सो फलों से लदा छायादार आम्रवृक्ष सबको सुहाया और वे डेरा डालकर वहां रात्रि विश्राम करने लगे। भोजन पकाने के लिए आग की जरूरत पड़ी, सो उसने नजर दौड़ाई तो पास में ही सूखा बांस खड़ा पाया। उन्होंने उसे ही काट कर जलाना आरंभ कर दिया। अब बांस को महसूस हुआ कि लोकपरायणता ही जीवन की सच्ची निधि है।

सुरेश कुमार गौरव,
प्रधानाध्यापक,
उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा,
पटना (बिहार)

गांव के एक छोटे से विद्यालय में आदर्श नाम का एक शिक्षक था, जो अपने छात्रों को सिर्फ़ किताबों का ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता और जीवन-मूल्यों की सीख भी देता था। उनकी कक्षा में एक होनहार छात्र था—रवि। वह पढ़ाई में तेज़ था, लेकिन उसे हर हाल में जीतने की आदत थी, चाहे सही तरीके से हो या गलत तरीके से।

विद्यालय में वार्षिक परीक्षा हुई। रवि ने पढ़ाई तो की थी, लेकिन वह परीक्षा में अव्वल आने के लिए नकल करने का निश्चय कर चुका था। उसने अपने जूतों के भीतर उत्तर लिख लिए। परीक्षा के दौरान जब शिक्षक आदर्श निरीक्षण कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि रवि कुछ सदिग्ध हरकतें कर रहा है। मगर बिना कुछ कहे वे आगे बढ़ गए।

परीक्षा समाप्त होने के बाद आदर्श सर ने पूरी कक्षा को एक कहानी सुनाई—

"एक बार एक राजा के दरबार में एक साधु आया। उसने कहा कि जो इस दीपक की लौ को अपने सत्य के प्रकाश से जला देगा, वही सच्चा और महान इंसान होगा। कई मंत्रियों और दरबारियों ने प्रयास किया, लेकिन दीपक नहीं जला। अंत में, एक छोटा बालक आया और बोला, 'मैं झूठ बोलता हूँ, दूसरों से ईर्ष्या करता हूँ, और कभी-कभी अपने फायदे के लिए गलत काम भी करता हूँ। लेकिन मैं अपनी गलतियों को स्वीकार करता हूँ और इन्हें सुधारना चाहता हूँ।' इतना कहते ही दीपक जल उठा। साधु ने कहा— 'सत्य को स्वीकारने और सुधारने की इच्छा ही सच्चे उजाले की पहचान है।'"

रवि को यह कथा सुनकर अपने किए पर पछतावा हुआ। उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली और आदर्श सर से क्षमा माँगी। उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "गलती करना बुरा नहीं, लेकिन उसे छुपाना आत्मा के प्रकाश को धुंधला कर देता है। नैतिकता वही है जो हमें अंधकार से उजाले की ओर ले जाए।"

उस दिन से रवि ने सच्चाई और ईमानदारी को अपने जीवन का आधार बना लिया। वह पढ़ाई में भी आगे बढ़ा, और एक दिन एक ईमानदार अधिकारी बना, जिसने अपने गाँव को भी प्रगति की राह दिखाई।

नैतिक शिक्षा: सत्य और ईमानदारी की राह कठिन हो सकती है, लेकिन वही जीवन को सच्चे प्रकाश से आलोकित करती है।

गर्मियों की छुट्टी में आनंद लीजिये श्रीनगर के डल झील का

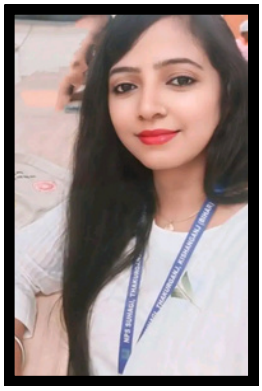

निधि चौधरी
NPS SUHAGI

डल झील श्रीनगर, कश्मीर की एक प्रसिद्ध झील है। यह हमारे आकर्षण का मुख्य बिंदु रहा। १८ किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई यह झील तीन दिशाओं से पहाड़ियों से घिरी हुई है। कश्मीर घाटी की अनेक झीलें आकर इसमें मिलती हैं। इसके चार प्रमुख जलाशय हैं गगरीबल, लोकुट डल, बोड डल तथा नागिन।

यहाँ शिकारा अर्थात छोटी छोटी नावों में आप सवारी कर सकतें हैं। साथ ही यहाँ पर सैकड़ों की संख्या में हाउस बोट भी है जिसमे होटलों की तरह लग्ज़री सुविधाएं है। और इसमे एक रात रुकने का किराया दो हजार से ले कर पैंतीस हज़ार तक है। देवदार की लकड़ियों से बने ये हाउस बोट पानी पर ही अवस्थित हैं और यहां से रात्रि के समय झील का नज़ारा बेहद मनोरम होता है।

झील में बत्तखों और पक्षियों के दृश्य काफी लुभावने थें। झील में ही आपको कहीं कश्मीरी ड्रेस में में फ़ोटो खिंचने वाले फोटोग्राफर मिल जाएंगे। साथ ही केसर, जूलरी, कहवा इत्यादि ले कर फेरी वाले भी मिल जाएंगे। लेकिन इनके पास शायद असली केसर नहीं रहता।

अब थोड़ा आगे बढतें है तो कुछ स्कूली बच्चे नावों पर दिखें। हमारी जिज्ञासा हुई नाविक ने बताया कि डल झील में बहुत सारे गाँव भी है। ये लोग इस झील में ही खेती करतें हैं। और ये लोटस, मौसमी सब्जियां, गाजर, मूली इत्यादि की खेती करतें है और वो भी जैविक खाद का प्रयोग कर के। और उससे भी दिलचस्प यह कि इन खेतों को आवश्यकता अनुसार पानी मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर शिफ्ट भी किया जा सकता है। और यहां झील में ही पानी पर न सिर्फ रोजमर्रा के जरूरतों के सामानों के लिए दुकानें हैं। बल्कि पर्यटकों के लिए मीना बाजार भी है। जिस तरह हम अपने घरों में बाइक रखतें हैं उसी तरह यहां के लोगों के पास छोटी छोटी नाव हुआ करती है। इसी से बच्चे स्कूल भी जाते है। सच मे डल झील ने हमे मोह लिया।

झील को डल नाम क्यों दिया गया?

डल झील शब्द क्षेत्रीय भाषाई और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है. कश्मीरी भाषा में 'डल' शब्द का मतलब ही झील होता है. बाद में 'डल' के साथ अलग से 'झील' शब्द आम बोलचाल के प्रवाह में जोड़ दिया गया, फिर यह 'डल झील' बन गया.

कैसे बनी डल झील ?

इस सवाल के जवाब में कई सिद्धांत कहे जाते हैं. एक सिद्धांत कहता है कि यह एक हिमनद है जो कालांतर झील में बदल गई है. दूसरा सिद्धांत कहता है कि खबी झेलम नदी में भयानक और बेतहाशा बाढ़ आने के कारण डल झील का निर्माण हुआ होगा. हालाकि इस सवाल का अभी तक कोई ठोस जवाब नहीं मिल सका है.

कैसे पहुँचे श्रीनगर ?

श्रीनगर सड़क के जरिए पूरे देश से जुड़ा है। श्रीनगर आप अपनी कार से भी जा सकते हैं और बस के जरिए भी पहुंचा जा सकता है। श्रीनगर तक दिल्ली, पंजाब और हरियाणा के कई शहरों से सीधी बस सेवा है। इसके अलावा जम्मू के लगभग हर बड़े शहर से भी सीधी बस सेवा श्रीनगर के लिए है। लेह और कटरा से भी श्रीनगर तक बस चलती है। आप पटना से दिल्ली के रास्ते श्रीनगर पहुंच सकतें हैं। दिल्ली से 814 किलोमीटर, सड़क के रास्ते अगर आप श्रीनगर जा रहे हैं तो जम्मू होकर ही जाना होगा। श्रीनगर जाने से पहले रोड के बारे में अच्छी तरह पता कर लें और मौसम देखकर ही श्रीनगर के लिए निकले क्योंकि सर्दियों के समय बर्फबारी होने से कई बार श्रीनगर हाइवे बंद कर दिया जाता है जिससे श्रीनगर बाकी देश से कट जाता है। बर्फ हटने के बाद ही सड़क मार्ग को खोला जाता है।

समान अवसर

कक्षा से बच्चों के शोरगुल की आवाजें आ रही थी,प्रधानाध्यापक ने झांककर देखा तो कुछ बच्चे आपस में उलझ रहे थे।
उन्होंने बच्चों को डाँटते हुए कहा कि दस मिनट शोर न करें सभी शिक्षक किसी जरूरी विषय पर दस मिनट के लिए बैठक कर रहें।
दस मिनट में वह आएंगे।और फिर वह चल पड़े।प्रधानाध्यापक के दो कदम आगे बढाते ही जो बच्चे बिल्कुल शांत थे वह फिर से आपस में बात करने लगें।
प्रधानाध्यापक फिर पीछे मुड़कर कक्षा के एक विकलांग छात्र रोहन को कहा कि वह शोर करने वाले बच्चे का नाम लिखकर रखे।और फिर वह कार्यालय में चलें गए।
शिक्षक बैठक के बाद जब कक्षा में पहुँचे तो रोहन रो रहा था।शिक्षक के पूछने पर उसने बताया कि बच्चे उसका मजाक बना रहे थे कि स्वयं तो चल फिर नही पाता और हमलोगों का नाम लिखेगा।
शिक्षक ने उन सभी बच्चों को खड़ा करके बहुत डाँटा और समझाया ईश्वर ने सबको विशेष प्रतिभा दी है और किसी की कमियों का मजाक नही बनाना चाहिए।
विधालय में सबको समान अवसर दिए जाते किसी में कोई फर्क नही किया जाता ताकि सबका समान रूप से विकास हो सके।
इसलिए विकलांग छात्र भी अगर तुम्हारा नेतृत्वकर्ता है तो उसका सम्मान जरूर करना चाहिए।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ गुठनी
सिवान बिहार

लघु कथा

बंटी की दोस्ती

बंटी एक छोटा, चुलबुला खरगोश था जो जंगल के किनारे अपने बिल में रहता था। वह बहुत मिलनसार था, लेकिन उसके कोई खास दोस्त नहीं थे। वह हमेशा सोचता कि काश, उसे भी एक सच्चा दोस्त मिल जाए।

एक दिन, बंटी जंगल में गाजर खोजने निकला। अचानक, उसने देखा कि एक छोटी गिलहरी जिसका नाम गुड़िया था वो पेड़ की एक ऊँची डाल से नीचे गिरने वाली थी। बंटी बिना समय गँवाए दौड़ा और अपने मुलायम शरीर से गुड़िया को सहारा दे दिया। गुड़िया बच गई, लेकिन डर के मारे काँप रही थी।

बंटी ने मुस्कुराकर कहा, "चिंता मत करो, अब तुम सुरक्षित हो!"

गुड़िया ने आभार भरी नज़रों से बंटी को देखा और बोली, "तुमने मेरी जान बचाई! क्या हम दोस्त बन सकते हैं?"

बंटी खुशी से उछल पड़ा, "बिलकुल! मैं तो हमेशा से एक सच्चे दोस्त की तलाश में था!"

उस दिन के बाद से, बंटी और गुड़िया हमेशा साथ रहते। वे मिलकर फल और गाजर खोजते, खेलते और ढेर सारी बातें करते। उनकी दोस्ती पूरे जंगल में मिसाल बन गई।

शिक्षा:
सच्ची दोस्ती निःस्वार्थ भाव से मदद करने से बनती है। जब हम किसी की भलाई के लिए कुछ करते हैं, तो हमें जीवनभर के लिए सच्चे दोस्त मिल सकते हैं।

कंचन प्रभा (शिक्षिका)
रा0 मध्य विद्यालय गौसाघाट, सदर, दरभंगा

अंक

अंक-अंक जोड़कर वो अंक भर गया,
फिर अंक में वो भरने का जिद कर गया,
जब अंक के हिसाब में सिर खपने लगें,
फिर अंक से हीं चेहरे का अंक बदल गया।।

है अंक से हीं अंक का नाता अजीब सा,
है अंक से हीं राज खुलता नसीब का,
है अंक का हीं खेल रेल जेल मेल में,
है अंक हीं जो जिंदगी का पाश बन गया।।

अंक से हीं भेद है बना यहाँ- वहाँ,
अंक हीं हैं पाटता भी जाकर जहाँ- तहाँ,
अंक से हीं हार-जीत होते हर जगह,
अंक से हीं शासन का सोंच हो गया।।

अंक का है खेल छंद काव्य के विभेद में,
अंक का है खेल खेल के मतभेद में,
अंक झांकते सदा अंक ताकतें सदा,
अंक हीं तो जिंदगी का शोध हो गया।।

कहीं अंक से सूना आंगन,
कहीं अंक को तरसा जीवन,
अंकों के इस उलझन में पड़कर,
पाठक को सत्य बोध हो गया।।

रचयिता:- राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना

ज्ञान की दीपशिखा

प्रज्ञा की ज्योति जलाए जो,
अंधकार को दूर भगाए जो।
ज्ञान का दीपक बनकर चमके,
हर मन में उम्मीद जगाए जो।

चलो प्रज्ञाणिका बन जाएँ,
सत्य-पथ पर कदम बढ़ाएँ।
अज्ञान की बेड़ियाँ तोड़कर,
नव सोच की किरणें फैलाएँ।

संघर्षों से घबराना कैसा?
हर मुश्किल में है हल छिपा।
जो सीख सहेजे, आगे बढ़े,
वही असल में है विजेता बना।

प्रज्ञा ही शक्ति, प्रज्ञा ही राह,
सपनों को दे यह नयी चाह।
ज्ञान के दीप जलाकर देखो,
हर अंधियारा होगा तब विदा।

तो बढ़ो, अडिग रहो,
निरंतर सीखते जियो।
प्रज्ञाणिका बनकर इस जग में,
नई रोशनी के दीप धरो।

अनिष चंद्रा रेणु
उत्क्रमित हाइ स्कूल बुढ़कारा
कटरा मुजफ्फरपुर

अंगेठी सा तू जल जरा

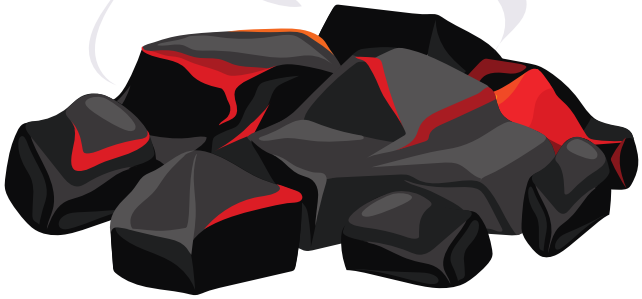

अंगेठी में ना होती लौ ,ना होती कोई लपेटे ।
पर तमस समेटे रहते हैं ये काले जलते कोयले।
यूं ही साए में जीते हैं पर तम- तिमिर-तृष्णा ,
सब की गले लगाते हैं ।
अंदर-अंदर ये धधक रहे,
मानो लहरों को लपक रहे
पर सोने सा यह चमक रहे ।
ना होती लौ इनकी स्वाभिमानी,
ना होती कभी लपेटे अभिमानी।
काले-काले जलते कोयले की बस यही कहानी
काले-काले जलते कोयले की बस यही कहानी।
बिना शिकवा शिकन मौज ही है इसकी बलिदानी ।
टीस पीड़ा और बयार से थोड़ा प्यार,
बदले में कुछ नहीं जलकर मिटाना ही है इसका संसार।
बस थोड़ी बयार तो आने दे इसे अपनी जलन बनाने दे ,
गर रूठे ये बयार भी सिकन ना मुझ पे आएगा ।
मेरी सिसकियां ही मुझे सोने सा चमकाएगा ।
मेरी सिसकियां ही मुझे सोने सा चमकाएगा।।

संजय कुमार गुप्ता
PGT गणित
+2 LBSS उच्च विद्यालय पलासी अररिया।

सुनीता तेरे धैर्य

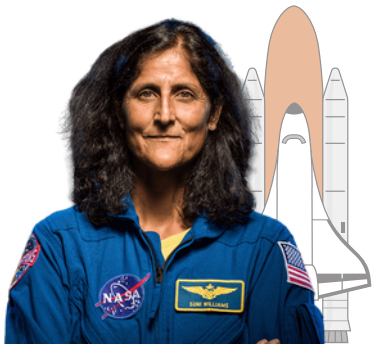

चहुंओर ओर है छाई खुशियां,नवकलियां मुस्काई है ।
फ्लोरिडा के तट पर देश की बेटी, आज उतरकर आई है।।
साहस शौर्य से भरी वो युवती, धैर्य दृढ़ता का पहन लिबास ।
नौ माह अंतरिक्ष में रहकर,अब आई हम सबके पास।।
जिसके साहस पर शीश नवाये, दशों दिशाएं, तीनों काल।
बाल न बांका हुआ है उसका,दम दम दमके जिसके भाल।।
अंतरिक्ष के वो गर्भ गृह में,सलाद के पौधे उगाकर आई।
अपनों से वो बिछड़ के भी, दुनियां के लिए उपलब्धि लाई।।
हम आकुल व्याकुल थे मानो ,एक झलक बस पाने को।
हाथ हिलाकर लौटी सुनीता भारत के मान बढ़ाने को।।
भारत भू के कण कण महके , महके पावन मेहसाणा ।
खुशियों की हो रही है बारिश, सुनीता का हुआ है जब आना।।
धरती आसमान को एक करी है, नयी प्रयोग कर आई है।
अंतरिक्ष में रहकर वो कितने ,अनुभव अपने संग में लाई है।।
बेटा भाग्य से होता पर देखो, बेटियां सौभाग्य से आती हैं ।
पृथ्वी से लेकर गगन मंडल तक नाम अमर कर जाती है।।
सुनीता तेरे धैर्य दृढ़ता का गान यह जगत दुहराएगा।
जब भी होगी बात तेरी , ये गगन भी शीश झुकाएगा।।
विश्वगुरु भारत की बेटी ने , रचा है फिर से नया इतिहास।
चुनौतियां देकर मौत को आई , हंसते हंसते हम सबके पास।।

मनु कुमारी,विशिष्ट शिक्षिका,मध्य विद्यालय
सुरीगांव, बायसी,
पूर्णियां बिहार

16

बच्चों का कोना

प्रा वि भरत दास मन्दिर
रोसड़ा
आकृति कुमारी

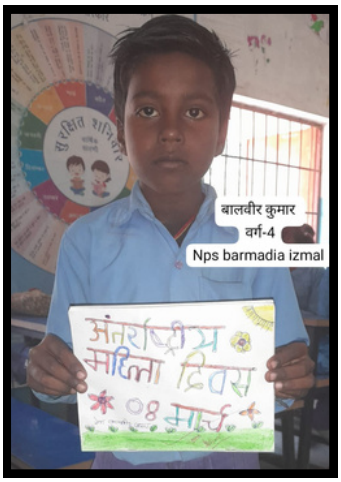
बालवीर कुमार
वर्ग-4
Nps barmadia izmal

Kajal or shivani
Class-4
Nps barmadia izmal

16
UMS CHOROGADDI BEP,
POTHIA, KISHANGANJ

राजकुमार क्लास 4 प्राथमिक विद्यालय महेश पट्टी
नरपतगंज जिला अररिया

नेहा और रौशनी
वर्ग-4
Nps बरमदिया इजमाल

Pinki kumari ps mahespatti narpatganj
district Araria

बच्चों का कोना

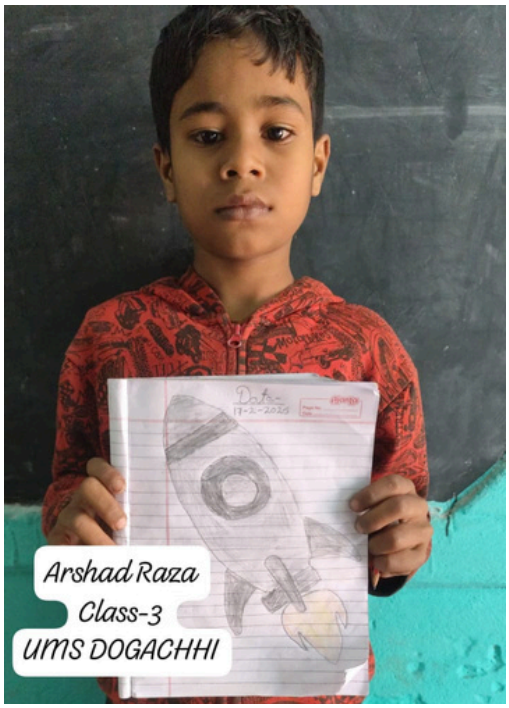

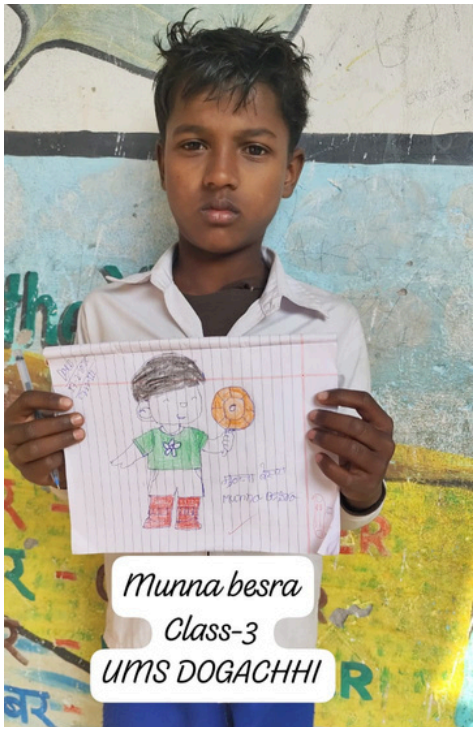

ToB प्रस्तुत करतें हैं बालमन्च यह पत्रिका बच्चों में रचनात्मक गुणों को निखारने में मदद करती है। यह पूर्णतः बच्चों की रचनाओं, पेंटिंग्स इत्यादी पर आधारित है।

बच्चों का कोना

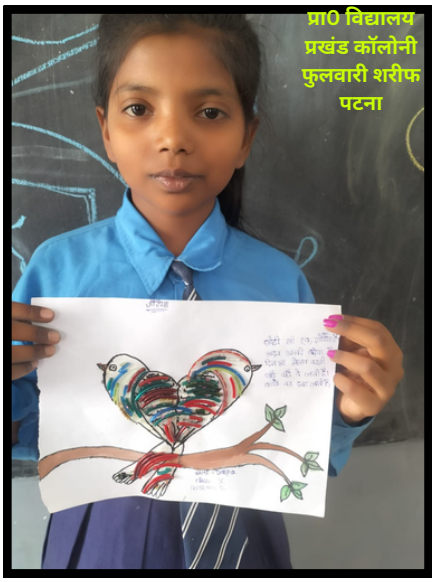

टीचर्स ऑफ बिहार की एक और बेहतरीन प्रस्तुति बालमन पत्रिका एक मासिक पत्रिका है जो सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की प्रतिभा और रचनात्मकता को केवल विद्यालयों तक सीमित न रखते हुए, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य विगत 38 महीनों से कर रही है। बालमन समय - समय पर थीम बेस्ड प्रतियोगिता करवाते हुए बच्चों को सम्मानित भी करती है। जनवरी 2022 को की गई थी। यह पत्रिका बच्चों के मन में कला और सृजनात्मकता के प्रति जागरूकता बढ़ाने, उनके विचारों और रचनात्मक क्षमताओं को मंच प्रदान करने तथा उन्हें सम्मानित कर प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही है।

बालमन पत्रिका उन बच्चों के लिए एक विशेष मंच है, जो दुर्गम पहाड़ी और ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और अपनी कला व प्रतिभा को प्रदर्शित करने के अवसरों की तलाश में होते हैं।

17

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्, कटिहार

इसलिए हम बच्चों को इस तरह के भोजन से बचना चाहिए जिसमें बेड फैट, ट्रांस फैट होते हैं। जिससे आजकल छोटे-छोटे बच्चों में बच्चों में शुगर, हार्ट से संबंधित समस्या उत्पन्न हो रहा है। इन भोजन से शरीर में अधिक कैलोरी जमा हो रहा है। एक सर्वे के मुताबिक 2050 तक तीन में से एक व्यक्ति डायबिटिक होगा। इस तरह का भोजन बच्चों के लिए स्लो प्वाइजनिंग के जैसा होता है।

बच्चों का भविष्य हमारे हाथ में है बच्चे जीद कर सकते हैं लेकिन अपने आप जाकर जंक फूड तब तक नहीं खा सकते हैं जब तक कि आप अपनी जेब से पैसा निकाल कर उनको नहीं दे देते। आप अपने बच्चों का भविष्य बर्बाद कर रहे हैं, क्योंकि हम उनकी नींव को ही कमजोर कर रहा है इस कमजोर नींव पर वो कैसे इमारत खड़ी कर पाएंगे आप खुद समझदार हैं, आप खुद सोच सकते हैं।

बच्चों को जंक फूड जितनी जल्दी हो बैंन करवाइए उनको घर का भोजन, ऑर्गेनिक फूड, सीजनल फ्रूट लेने का आदत लगाइए इससे बेहतर कुछ और नहीं हो सकता। अपने बच्चों को शारीरिक व्यायाम करवाइए इन खतरनाक बीमारियों से उन्हें बचाइए! मेरा आपसे हाथ जोड़कर निवेदन है। देश के कमर्धारियों को बचाइए।

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्, कटिहार

गोमुखासन

गोमुखासन का नाम दो शब्दों से बना है गाउ यानी गाय के मुख यानी चेहरा। इस आसन में जांघ और पिंडली गाय के चेहरे के समान मुद्रा में होते हैं पीछे की ओर चौड़ा और आगे की ओर पतला।

गोमुखासन करने का तरीका –

सुखासन में बैठें, अपने पैरों को आगे बढ़ाएं।
बाएं टाँग को मोड़ें और शरीर के करीब खींच लें।
अपने दाहिने घुटने को उठाएं और बाएं पैर को दाहिनी जांघ के नीचे टीका लें ताकि वह नितंब को छू सके।
अपने दाहिनी टाँग को शरीर की ओर खींचें और बाएं जांघ के उपर से इसे घुमा कर रख लें ताकि पैर ज़मीन पर टिका हो।
बाएं हाथ को पीठ पर टिकायं और दायें हाथ को उठा कर कंधे के उपर से ले जा कर पीठ पर टिकाएं।
बाएं हाथ का पिछला हिस्सा रीढ़ की हड्डी पर टीका होना चाहिए, जबकि दाहिने हाथ की हथेली रीढ़ की हड्डी पर टिकी होनी चाहिए।
अब पीठ के पीछे ही दोनों हाथों को एक दूसरे से पकड़ने की कोशिश करें।
दाहिने हाथ को सिर के पीछे ले आयें, ताकि सिर हाथ के अंदर के भाग को छू सके।
रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी होनी चाहिए और सिर आगे की ओर बिल्कुल नहीं होना चाहिए।
आँखें बंद कर लें। इस मुद्रा में 2 मिनट तक रहें।
पुनः टाँगों को सीधा कर लें और दूसरी तरफ से दोहराएं।

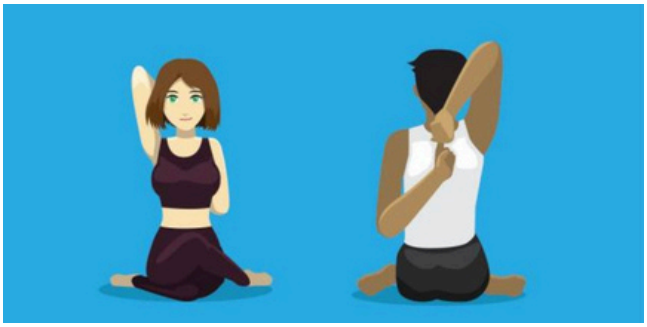

जांघों, कूल्हों, ऊपरी पीठ, ऊपरी बांह और कंधों के मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।
विश्राम करने के लिए गोमुखासन एक उत्कृष्ट आसन है।
यदि दस मिनट या अधिक के लिए आप इसका अभ्यास करें, तो यह थकान, तनाव और चिंता को कम करेगा।
यह गुर्दों को उत्तेजित करता है और दीर्घ आयु में मधुमेह की शुरुआत होने की संभावना कम करता है।
यह पीठ दर्द, कटिस्नायुशूल (साएटिका), गठिया और कंधे और गर्दन में सामान्य कठोरता से राहत देता है।
छाती को खोलता है और आपके पोश्चर या सामान्य बैठने और खड़े होने की मुद्रा में सुधार लाता है। पैर में ऐंठन को कम करता है और पैर की मांसपेशियों को मज़बूत बनाता है।

गोमुखासन करने में क्या सावधानी बरती जाए
यदि आपको गंभीर गर्दन या कंधे की समस्या है, तो गोमुखासन ना करें।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा से जुड़ी प्रमुख नीति एवं समाचार

1.दिल्ली सरकार का बड़ा तोहफा, 1.63 लाख छात्रों को मिलेगी NEET – CUET की फ्री कोचिंग

दिल्ली सरकार ने सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे मेधावी छात्रों के लिए नीट (NEET) और सीयूईटी (CUET) परीक्षा की मुफ्त कोचिंग की सुविधा शुरू की है। गुरुवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और शिक्षा मंत्री आशीष सूद की उपस्थिति में सरकार ने दो बड़े निजी संस्थानों, भारत इनोवेशन ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड (BIG) और Physics Wallah के साथ समझौता किया। इसके तहत, दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 1.63 लाख छात्रों को मुफ्त कोचिंग दी जाएगी, जिससे वे प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की बेहतर तैयारी कर सकें। योजना के तहत दो अप्रैल से छात्रों को नीट और सीयूईटी की कोचिंग दी जाएगी। यह कोर्स एक महीने का होगा, जिसमें हफ्ते में छह दिन कोचिंग दी जाएगी। कुल 180 घंटे की इस कोचिंग में पढ़ने के लिए मैटेरियल, प्रश्नों के समाधान और मॉक टेस्ट भी शामिल होंगे। इससे आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की बेहतर तैयारी में मदद मिलेगी।

2.दिल्ली हाई कोर्ट का नया फैसला बिना सीटीईटी पास अब नहीं पढ़ा सकेंगे शिक्षक:-

बिना कोई दक्षता परीक्षा दिए अरसे से निजी और सरकारी स्कूलों में पढ़ा रहे देशभर के शिक्षकों के लिए अब केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (सीटीईटी) को पास करना जरूरी होगा। दिल्ली हाईकोर्ट ने अपने महत्वपूर्ण आदेश में कहा कि कोई भी शिक्षक इस पात्रता परीक्षा को पास किए बगैर अपनी सेवा आगे बरकरार नहीं रख पाएगा। हाईकोर्ट ने इस आदेश में विशेषतौर पर कहा कि जो शिक्षक दशकों से पढ़ा रहे हैं और उन्होंने एनसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों से बीएड अथवा शिक्षण संबंधी डिग्री व डिप्लोमा नहीं किया है तो उन्हें दोबारा मान्यता प्राप्त संस्थानों से अपनी बीएड व शिक्षण संबंधी डिप्लोमा करना होगा। इसके लिए उन शिक्षकों को समय दिया जाएगा। यह डिग्री लेने के बाद इन शिक्षकों को सीटीईटी परीक्षा पास करनी होगी। उसके बाद ही वह अपनी सेवा को विद्यालयों में जारी रख सकेंगे।

आम बजट 2025 में शिक्षा एवं मानव संसाधन हेतु की गई प्रमुख घोषणाएं :- अटल टिंकरिंग लैब्स:- अगले पांच वर्षों में सरकारी स्कूलों में 50,000 अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जाएंगी।

चिकित्सा शिक्षा का विस्तार :- अगले वर्ष मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में 10,000 अतिरिक्त सीटें जोड़ी जाएंगी, जिससे अगले 5 वर्षों में सीटों की संख्या 75000 हो जाएगी।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

1. बिहार में ऑटो और ई-रिक्शा से अब बच्चे नहीं जाएंगे स्कूल, 1 अप्रैल से लागू होगा नियम

बिहार सरकार ने बच्चों की सुरक्षा को अहमियत देते हुए एक बड़ा फैसला लिया है। परिवहन विभाग तथा पुलिस मुख्यालय के तरफ से संबंध में एक संयुक्त आदेश जारी किया गया है कि 1 अप्रैल 2025 के बाद स्कूली बच्चों के परिवहन के लिए ई-रिक्शा तथा ऑटो के इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। यह कदम राज्य में बढ़ते सड़क हादसों के मद्देनजर लिया गया है।

2. बिहार दिवस पर देखिए बदलती शिक्षा व्यवस्था की तस्वीर

बिहार दिवस के अवसर पर गांधी मैदान में 22 मार्च से 24 मार्च तक आयोजित बिहार दिवस के कार्यक्रम में इस बार का मुख्य आकर्षण बिहार में बदलती शिक्षा व्यवस्था की तस्वीर रही। इस अवसर पर अलग-अलग विभाग के द्वारा 44 विभागों के 60 स्टॉल लगाए गए इसमें शिक्षा विभाग द्वारा "उन्नत बिहार विकसित बिहार" की थीम पर बनाया गया शिक्षा पवेलियन लाखों लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा जिसमें केंद्र तथा राज्य सरकार की शिक्षा से जुड़ी योजनाओं को प्रदर्शित किया गया। टीचर्स ऑफ बिहार तथा एससीईआरटी के द्वारा बनाए गए मॉडल स्कूल पवेलियन जिसमें बिहार के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को प्रदर्शित किया गया जिसकी सराहना अपर मुख्य सचिव ,SCERT डायरेक्टर तथा शिक्षा विभाग तमाम अधिकारियों के द्वारा की गई। Scert एवं टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक श्री शिव कुमार के निर्देशन में बिहार के अलग-अलग जिलों से आए उत्कृष्ट शिक्षकों के द्वारा कला, संगीत ,विज्ञान ,खेल ,पर्यावरण एवं व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था के आदर्श रूप को मॉडल स्कूल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जो छात्रों के बीच चर्चा का विषय रहा।

3.बिहार सरकार ने प्रधानाध्यापक को दी और अधिक ताकत स्कूलों के लिए कर सकेंगे 2.5 लाख तक के विकाश कार्य

शिक्षा विभाग बिहार सरकार ने प्रधानाध्यापक को और अधिक वित्तीय अधिकार दिए हैं जिससे वे अब स्कूल के विकास कार्यों के लिए जमा कोश से 2.5 लाख रुपए खर्च कर सकेंगे जिससे स्कूलों में विकास कार्य जल्द हो सके। इसके साथ ही विद्यालय प्रबंध समिति के भी वित्तीय शक्तियों को बढ़ा दिया गया है। 5 लाख तक के विकास कार्य विद्यालय प्रबंध समिति के माध्यम से विद्यालय में कराए जाएंगे, साथ ही साथ 5 लाख से अधिक के विकास कार्य विद्यालय प्रबंध समिति के अनुशंसा पर राज्य शैक्षणिक आधारभूत संरचना निगम के द्वारा कराए जाएंगे। यह निर्णय विद्यालय स्तर पर आवश्यक आधारभूत संरचना के निर्माण में तेजी लाने के लिए लिया गया है।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

4. बिहार राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों में नामांकित स्नातक छात्रों को अब अप्रेंटिसशिप का मौका मिलेगा

यह योजना राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) के तहत शुरू की गई है, जिसका उद्देश्य कक्षा शिक्षा और वास्तविक दुनिया के अनुभव के बीच के अंतर को पाटना है।

उद्देश्य:- इस योजना का मुख्य उद्देश्य छात्रों को रोजगार के लिए तैयार करना है और उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है।

पात्रता:- जो छात्र BA, Bsc, BBA, BCA या B.com पाठ्यक्रमों की अंतिम सेमेस्टर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, वे अप्रेंटिसशिप के लिए अपना नामांकन करा सकते हैं।

प्रशिक्षुता अवधि: 12 महीने की प्रशिक्षुता के दौरान छात्रों को विभिन्न उद्योगों में काम करने का अवसर मिलेगा.

5. हर प्रखंड से 2 शिक्षकों को दी जाएगी आपदा से निपटने की ट्रेनिंग

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण शिक्षकों को आपदा से निपटने का प्रशिक्षण प्रदान करेगा जिससे वह विद्यालय में बच्चों को आपदा से बचाव के उपाय के बारे में जागरूक कर सकें और सुरक्षित शनिवार के तहत आपदा प्रबंधन के उपाय बच्चों को सिखा सकें।

प्रशिक्षण का उद्देश्य: - इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को आपदा प्रबंधन की जानकारी देना तथा उन्हें आपदाओं से निपटने के लिए तैयार करना है। प्रशिक्षण के आयोजन 3 अप्रैल से 27 मई तक विभिन्न प्रमंडलों के लिए अलग-अलग तिथियों में पटना स्थित चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान में किया जाएगा जिसमें बाढ़, आगजनी, तूफान, भूकंप, विद्यालय सुरक्षा पखवाड़ा, सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम आदि के बारे में जानकारी दी जाएगी। इस प्रशिक्षण में हर प्रखंड से 2 शिक्षकों का चयन मास्टर ट्रेनर के रूप में किया जाएगा।

6. एक अप्रैल से कक्षा छह से आठवीं के बच्चे पढ़ेंगे एनसीइआरटी की किताब

सीबीएसइ के स्कूलों की तरह अब राज्य सरकार के स्कूलों में भी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की किताबें पढ़ायी जायेंगी। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) के निदेशक सज्जन आर ने बताया कि अब तक सीबीएसइ स्तर के स्कूलों में एनसीइआरटी की किताबें चला करती थीं. लेकिन अब राज्य के सरकारी स्कूलों में एनसीइआरटी किताबें चलेगी. यह व्यवस्था नये सत्र यानी एक अप्रैल से कक्षा छह से आठवीं तक में लागू हो जायेगी. उन्होंने बताया कि कक्षा छह से आठवीं तक में चलायी जाने वाली एनसीइआरटी की पुस्तक में कोई बदलाव नहीं किया गया है. इन बच्चों को वही चैप्टर पढ़ाये जायेंगे, जो सीबीएसइ से संबद्ध स्कूलों में पढ़ाये जाते हैं. केवल एनसीइआरटी के पुस्तक में बिहार के संदर्भ में चीजों को जोड़ा गया है. जैसे बिहार की संस्कृति, सभ्यता, बिहार के विभूति, पर्यटन स्थल, ऐतिहासिक स्थल आदि शामिल हैं. बाकी चैप्टर एनसीइआरटी के ही होंगे। वर्ष 2026 से कक्षा नौ से 12वीं में भी एनसीइआरटी किताबें चलेंगी. इसकी तैयारी अभी से ही शुरू कर दी गयी है. एनसीइआरटी की पुस्तक पढ़ने से बच्चों को प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने में आसानी होगी।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

छुट्टियों की लिस्ट डाउनलोड करने के लिए क्लिक करें

7. बिहार बोर्ड 12वी और 10वीं के मेधावी छात्रों पर बरसेगा इनाम,टॉपर्स को मिलेगी दोगुनी राशि

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (BSEB) ने कक्षा 10वीं के नतीजे घोषित कर दिए हैं जिसमें 82.11 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की है। टॉप-10 सूची में कुल एक सौ तेईस विद्यार्थी शामिल हैं, जिनमें 60 छात्र और 63 छात्राएं हैं। वहीं 12वीं के रिजल्ट में कुल 86.5 फीसदी विद्यार्थी पास हुए हैं। आर्ट्स में 82.75 फीसदी, कॉमर्स में 94.77 और साइंस में 89.59 फीसदी स्टूडेंट्स पास हुए हैं। बोर्ड की ओर से जारी टॉप पांच मेधा सूची में 65 फीसदी छात्राएं हैं। तीनों संकायों को मिलाकर कुल 28 टॉपर हैं। इसमें 18 छात्राएं और 10 छात्र शामिल हैं। शिक्षा विभाग द्वारा इस साल टॉपर को मिलने वाली धनराशि को दोगुना कर दिया है। प्रथम स्थान पर आने वाले छात्र को अब 2 लाख रुपये मिलेंगे। वहीं, दूसरे स्थान पर आने वाले छात्र को 1.5 लाख रुपये की पुरस्कार राशि मिलेगी, जो पिछले साल 75,000 रुपये थी। तीसरे स्थान पर आने वाले छात्र को 1 लाख रुपये मिलेंगे, जबकि चौथे से दसवें स्थान तक के छात्रों को 20,000 रुपये मिलेंगे। इसके साथ ही सभी टॉपर्स को एक लैपटॉप, प्रमाण पत्र और मेडल भी प्रदान किया जाएगा। इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा में 3 छात्रों ने टॉप किया जिसमें समस्तीपुर की साक्षी कुमारी, डीहरी की अंशु कुमारी तथा भोजपुर के रंजन वर्मा हैं । तीनों छात्रों ने 500 में से 489 नंबर लाकर राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

8.UNO ने नीतीश कुमार की साइकिल योजना को सराहा, अफ्रीकी देश जांबिया और माली में होगी लागू

बिहार में शिक्षा के परिदृश्य को बदलने वाली साइकिल योजना को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अफ्रीकी देशों में लागू करने का निर्णय लिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसके लिए जांबिया और माली का चयन किया है। UNO इसके लिए इन देशों को आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेगा। शिक्षा मंत्री ने सदन को बताया कि पिछले दिनों अमेरिका के एक शिक्षाविद व वहां के प्रोफेसर बिहार आए थे । उन्होंने नीतीश सरकार की साइकिल योजना को देखा और उसका जमीनी अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि कैसे इस योजना ने बिहार में शिक्षा व्यवस्था का कायापलट कर दिया । बड़ी संख्या में लड़कियां सरकारी विद्यालयों तक पहुंची, वह शिक्षा से जुड़ी और विद्यालयों में उनकी संख्या लड़कों के बराबर पहुंच गई। अमेरिकी विशेषज्ञ द्वारा सौंपी गई रिपोर्ट को यूएनओ के विशेषज्ञों ने काफी सकारात्मक रूप में लिया। यूएनओ ने इस अफ्रीकी देशों के लिए बेहतर उपयोगी माना , उन्होंने जांबिया और माली को रिपोर्ट भेजकर उसे अपने वाहन लागू करने को कहा। संबंधित देशों के विशेषज्ञों ने भी उसका अध्ययन कर उसका क्रियान्वयन करने का फैसला किया है। UNO ने इसके लिए दोनों देशों को आर्थिक मदद की भी घोषणा की है।

साइकिल योजना:- विशेष

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पहल पर वर्ष 2007 में 9वीं में पढ़ने वाली लड़कियों के लिए साइकिल योजना का शुभारंभ किया गया था। इस योजना के बाद अचानक लड़कियों का नामांकन प्रतिशत काफी बढ़ गया जिससे महिला सशक्तिकरण को एक नया आयाम मिला। लड़कियां जब गांव में सड़कों पर साइकिल से चलने लगी तो गांव का दृश्य ही बदल गया । वर्ष 2009 में लड़कों के लिए भी इस योजना को शुरू किया गया । आज लगभग 12 लाख बच्चे इस योजना का सालाना लाभ ले रहे हैं।

बिहार दिवस की बेहतरीन तस्वीरें

Source:- https://facebook.com/groups/teachersofbihar/posts/

ऐसे ही और बेहतरीन तस्वीर के लिए यहां क्लिक करें और लिखें #BiharDivas

विविध अंतरिक्ष परी

डॉ० अजय कुमार

सुनीता विलियम्स की सफल वापसी

अंतरिक्ष का विशाल संसार किसे नहीं विस्मित और मोहित करता है।अक्सर छुटपन में हम इस अबूझ से विशाल विस्तार के प्रति इतने मोहित और विस्मय से भरे होते हैं कि यह हमें कभी कल्पनातीत लगता है तो कभी एक अलग स्तर पर हमें उत्सुकता से भरता भी है। स्वभाव से जिज्ञासु मानव मन इसमें गोता लगाकर इसके बारे में सबकुछ जान लेने के लिए जान की बाजी तक लगाने को तैयार भी हो जाता है।

ऐसी ही जिज्ञासा से ओतप्रोत अमेरिकी नागरिक सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला के बाद भारतीय मूल की दूसरी अंतरिक्ष यात्री है। जिन्होंने इस अबूझ और विस्मय से भरपूर अंतरिक्ष की जानकारी हासिल करने के लिए अपने प्राण तक को दांव पर लगा दिया।

इनके पिता दीपक पांड्या का संबंध भारत के गुजरात राज्य से है। जबकि माता बोनी पांड्या स्लोवेनियाई मूल की है।
19 सितम्बर 1965 को ओहायो, अमेरिका में जन्मी सुनीता पेशे से एक नौ सेना पदाधिकारी के साथ ही वे प्रशिक्षित हेलिकॉप्टर पायलट भी हैं। साहसिक कार्यों में रुचि ने सुनीता को कुछ अलग करने की इच्छा से अंतरिक्ष यात्रा के प्रति उत्सुक किया। गीता और गणेश भगवान के प्रति उनकी श्रद्धा के साथ ही भारतीय खाद्य पदार्थ सिंघारा के प्रति प्रेम उनका जगजाहिर है। जिसे वह अपने अंतरिक्ष यात्रा के क्रम में साथ भी साथ ले गई थी।

ज्ञान,साहस और इसके प्रति प्रतिबद्धता के कारण ही नासा द्वारा संचालित कमर्शियल "क्रू प्रोग्राम" Boeing Starliner अंतरिक्ष यान मिशन में इनका चयन अंतरिक्ष यात्री के लिए हुआ।
अपने पहले अंतरिक्ष मिशन STS- 116-(2006-07) में अंतरिक्ष में सबसे ज्यादा 195 दिन तक रहने एवं सबसे ज्यादा स्पेस वॉक सात बार में 50 घंटे 40 मिनट का रिकॉर्ड अपने नाम करने वाली सुनीता विलियम्स पिछले कुछ दिनों से काफी चर्चा में रही है।
05 जून 2024 को मात्र एक सप्ताह के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन भेजा गया था। जबकि विभिन्न तकनीकी कारणों से उनकी वापसी अंततः काफी मशक्कत के बाद हुई और वे अपने सहकर्मी बुच विल्मोर के साथ स्पेस एक्स 'क्रू ड्रेगन ' यान द्वारा धरती पर 19 मार्च 2025को फ्लोरिडा के तट पर सुबह 03:27(IST) पर वापस आईं।सुनीता विलियम्स की सकुशल वापसी ने अंतरिक्ष विज्ञान में मानव की क्षमता को सफल साबित किया है।वह दिन दूर नहीं जब विज्ञान अंतरिक्ष जगत के विभिन्न रहस्यों को सुलझाने में मानव सफल हो जाएगा।

विविध

गर्मी की छुट्टियों में कैसे रखें बच्चों को व्यस्त

सभी बच्चों को गर्मी की छुट्टियों का इंतजार बेसब्री से रहता है। बच्चों के लिये ये छुट्टियाँ जहाँ मौज मस्ती भरा समय होता है वहीं ये अभिभावकों के लिये चुनौती भरा समय होता है। किस प्रकार छुट्टियों के दौरान बच्चों को व्यस्त रखते हुए मजेदार तरीके से नई चीज़ें सिखाई जाएं, इस बात को लेकर जिम्मेदार अभिभावक तनाव में भी रहते हैं। यदि छुटियों की योजना सही तरीके से बनाई जाय तो बालहित में गर्मी की छुटियों का सदुपयोग किया जा सकता है।

यदि गर्मी की छुट्टियों को ले कर आप भी चिंतित हैं अपने बच्चों के लिये तो यह लेख/स्तम्भ आपके लिये बहुत उपयोगी होने वाला है क्योंकि यहाँ दिये जा रहे हैं कुछ सुझाव जो आपके तनाव को कम करेगा और बच्चों को छुट्टियों के दौरान व्यस्त रखते हुए बच्चों के ज्ञान, अनुभव और सृजनात्मकता में वृद्धि करेगा। हालाँकि छुटियों के दौरान बच्चों को उनके विद्यालयों से गृहकार्य और प्रोजेक्ट भी मिलते हैं, उन्हें पूरा करने में सहयोग करते हुए समय और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर आप नीचे दिये गये सुझावों में से कुछ सुझावों का चयन कर अपने बच्चों की छुटियों को मजेदार और प्रेरक बना सकते हैं।

1. बच्चों को कला और रचनात्मकता के लिये प्रेरित करें।

आज के बच्चे समय मिलते ही फोन और टीवी में व्यस्त हो जाते हैं जो उनके स्वास्थ्य के साथ साथ रचनात्मकता को भी प्रभावित कर रहे हैं। छुट्टियों के दौरान आप अपने बच्चों को ड्राइंग, पेंटिंग, क्राफ्टिंग, पोटरी, क़्वीलिंग के अलावा बेकार पदार्थों से सजावट की सामग्री निर्माण इत्यादि के लिये प्रेरित कर सकते हैं, बच्चों को वाद्य यंत्र सीखने के प्रबंध भी किये जा सकते हैं, इन चीज़ों से बच्चों में कला, सौदर्यबोध, रचनात्मकता जैसे गुण विकसित होंगे और वे वस्तुओं के महत्व को समझ सकेंगे।

2. बच्चों को साहित्य में रुचि लेने के लिये प्रेरित करें।

छुट्टियों के दौरान अपने बच्चों को नई पुस्तकें खरीद कर दें, उन्हें ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिये प्रेरित करें जो उनके क्षितिज के विस्तार में सहायक हो। बच्चों को कहानी लेखन, कविता लेखन, संस्मरण, लेख इत्यादि लिखने के लिये प्रोत्साहित करें जिस से भाषाई रूप से समृद्ध होंगे ही, विवेकशील और चिंतनशील भी हो सकेंगे।

विविध

3. बच्चों को भ्रमण पर जरूर ले जाएं।

"पैसों से हमारी जेबें भर सकती हैं लेकिन यात्रा से हमारी आत्मा भरती है।" ये छुट्टियाँ दूरस्थ तथा स्थानीय पारिवारिक यात्राओं की योजना बनाने का एक अच्छा अवसर है। नई जगहों पर जाने से बच्चे अलग-अलग जीवन शैलियों और संस्कृतियों से परिचित होते हैं। चिड़ियाघर, संग्रहालय, पुस्तकालय, ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक स्थल, ऑडयोगिक स्थल, पार्क, बगीचा इत्यादि के भ्रमण से बच्चे जैविक विविधता तथा विभिन्न भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, जीवन शैली, इतिहास, परम्परा, भाषा, भोजन इत्यादि का अनुभव कर सकेंगे जो उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होगा।

4. बच्चों की हॉबी (शौक/रुचि) को निखारने पर ध्यान दें।

हर बच्चे की कोई ना कोई हॉबी होती है जिसे वो खाली समय में करना पसंद करते हैं। बच्चों की रुचियों को निखारने के लिये सम्बन्धित विशेषज्ञों से बात कर अपने बच्चे के लिये योजना बनाएं। छुट्टियों में बच्चों को उनके पास भेजें जिस से बच्चे आनदित भी होंगे और उस विशेष क्षेत्र में बेहतर हो सकेंगे।

5. बच्चों को बागवानी के लिये प्रोत्साहित करें।

आप छुट्टियों के दौरान खाली जमीन, पुराने जार, बाल्टी, बोतल या गमलों में भी बच्चों को बागवानी के लिये प्रेरित कर सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण, परिस्थितकी तंत्र, पोषण, संतुलित आहार इत्यादि के महत्व को समझने के साथ साथ आपके बच्चों को सक्रिय और गतिशील रखने में बागवानी एक बेहतर तरीका साबित होगा।

6. बच्चों के लिये टाइम कैप्सूल डिजाइन करें।

टाइम केप्सूल एक स्मृति पत्रिका (मेमोरी जर्नल) की तरह है,
उदाहरण के तौर पर इस टाइम केप्सूल को तैयार करने में आप बच्चों से कह सकते हैं कि वे परिवार के प्रत्येक सदस्य से खुद के लिये एक व्यक्तिगत लेख लिखवाएं, या वो ही सभी सभों सदस्यों के लोए लिखें, वो इसमें अपनी पसंदीदा तस्वीर और पसंदीदा संग्रहनीय वस्तुएँ भी शामिल कर सकते हैं...
इसे बच्चों को भविष्य में किसी निर्धारित तिथि पर खोलने के लिये संभाल कर रखने कहें, यह प्रक्रिया बच्चों में आश्चर्य, प्रतीक्षा और आनंद के भाव समायोजित करते हुए परिवार के अन्य सदस्यो से सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होगा।

विविध

7. बच्चों को समर कैंप या खेल कैंप में भेजें।

विभिन्न आयु वर्ग और रुचि वाले बच्चों के लिये विशेष रूप से गर्मी की छुट्टियों में पेशेवर विशेषग्यों के द्वारा कैंप की व्यबस्था की जाती है, आप अपने बच्चों को वहां भी भेज सकते हैं।
इन कैंपों में बच्चे आत्मनिर्भर होते हुए अपने आयुवर्ग के बच्चों के साथ पियर समूह में मजेदार तरीकों से विभिन्न कौशलो में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

8. बच्चों को ऑनलाइन कोर्स कराएं।

आज के समय मे बच्चों का आकर्षण फोन और कंप्यूटर के प्रति ज्यादा हो गया है, लेकिन वे इन चीज़ों का उपयोग मनोरंजन और टाइम पास के लिये करते हैं। ऑनलाइन स्पीकिन कोर्स, कोदुंग कोर्स, क्रिएटिव राइटिंग कोर्स, इंस्ट्रूमेंट कोर्स इत्यादि ऑनलाइन कोर्स में से आप अपने बच्चे की रुचि के अनुसार कोई भी कोर्स बच्चों से करवा सकते हैं जो उनके सफल भविष्य निर्माण में मददगार होंगे।

9. बच्चों को घर के कार्यों में सहयोग के लिये प्रोत्साहित करें।

ज्यादातर बच्चे अपने विद्यालयी शिक्षा के दौरान रोजमर्रा के कार्यों के लिये अपने माता पिता पर निर्भर होते हैं, छुट्टियों के दौरान उन्हें घर की दैनिक प्रक्रियाओं में बड़ों की मदद के लिये प्रोत्साहित करें, यह बच्चों में आत्मनिर्भरता विकसित करने में सहायक होगा।

10. बच्चों को स्वयंसेवा के लिये प्रोत्साहित करें।

छुट्टियों के दौरान आप अपने बच्चों को सामुदायिक कार्य, आस-पड़ोस की स्वच्छता, दान कार्य, सार्वजनिक या धार्मिक स्थलों पर चल रहे कार्यों में सहयोग, इत्यादि के लिये प्रेरित कर सकते हैं यह बच्चों में टीम वर्क के साथ-साथ सामाजिक कौशल विकासित करने तथा समाज में बच्चों की अच्छी छवि निर्माण में सहायक होगा।

ओम प्रकाश
उत्क्रमित उच्च मा० वि०
दखली टोला, पीरपैंती,
भागलपुर

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

2025 www.jagran.com कैंपस जागरण

भुवनेश्वर के 'लर्निंग फेस्टिवल' में विशेषज्ञों ने प्रेरणादायक माडल को सराहा

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : ओडिशा के भुवनेश्वर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आरआईई) में स्कूली शिक्षा में क्षमता निर्माण विषय पर विशेष प्रशिक्षण समस्तीपुर जिला के नौ शिक्षक शामिल हुए। जबकि, राज्य से 60 शिक्षकों ने भाग लिया। समस्तीपुर जिले से भाग लेने वाले शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में विशेष रूप से सर्व शिक्षा अभियान के तहत जिले में चल रहे नवाचारों को प्रस्तुत किया। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मानवेंद्र कुमार राय (प्राथमिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान) मानवेंद्र कुमार राय के मार्गदर्शन में जिले में 'लर्निंग फेस्टिवल' का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें बच्चों के अधिगम स्तर को बेहतर बनाने के लिए अभिनव शिक्षण तकनीकों को अपनाया जा रहा है। इस संदर्भ में समस्तीपुर के शिक्षक ऋतुराज जायसवाल ने भुवनेश्वर में 'लर्निंग फेस्टिवल' का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसमें जिले में हो रहे शैक्षिक नवाचारों और इनके सकारात्मक प्रभावों को साझा किया गया। इस प्रस्तुति को एनसीईआरटी के विशेषज्ञों ने सराहा और इसे अन्य जिलों के लिए एक प्रेरणादायक माडल के रूप में स्वीकार किया। जिले के शिक्षकों में मुकेश कुमार मृदुल, ऋतुराज जायसवाल, संजय कुमार झा, विनोद कुमार विमल, विवेक कुमार, विनय कुमार, उमेश कुमार, भावेश मिस्त्री, सुरेश कुमार ने इस कार्यक्रम में अपने बहुमूल्य अनुभव साझा करते हुए नई शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में स्कूली शिक्षा में क्षमता निर्माण विषय पर आयोजित विशेष प्रशिक्षण में जिले के नौ शिक्षक हुए शामिल

शिक्षा को अधिक प्रभावी और रोचक बनाने पर हुई चर्चा : शिक्षक ऋतुराज ने बताया कि कार्यक्रम में एनसीईआरटी के विशेषज्ञों द्वारा शिक्षकों को कई महत्वपूर्ण विषयों पर गहन प्रशिक्षण दिया। इसमें मुख्य रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली, अनुभवात्मक अधिगम, जादुई पिटारा, प्राथमिक स्तर पर रोचक शिक्षण तकनीक, साइंस इज फन में विज्ञान को रुचिकर और व्यावहारिक बनाना, परिवेशीय शिक्षा में स्थानीय परिवेश के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करना और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ना शामिल रहा। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को नई शिक्षण तकनीकों और आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण से अवगत कराना था, ताकि वे अपने विद्यालयों में इन तकनीकों को अपनाकर विद्यार्थियों की शिक्षा को अधिक प्रभावी और रोचक बना सकें।

समस्तीपुर के शिक्षक ऋतुराज जायसवाल को प्रमाण पत्र देते विशेषज्ञ • जागरण

शिक्षकों के अनुभव और प्रशिक्षण का प्रभाव : पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल शिक्षकों ने नई शिक्षण तकनीकों से जुड़ी बारीकियों को सीखा और इन्हें अपनी कक्षाओं में लागू करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की। शिक्षकों ने इस कार्यक्रम को व्यावहारिक ज्ञान से भरपूर और बेहद उपयोगी बताया। इस तरह, आरआईई भुवनेश्वर में आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बिहार के शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुआ। जिससे उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को जमीनी स्तर पर लागू करने की दिशा में मार्गदर्शन मिला। इस प्रशिक्षण के माध्यम से समस्तीपुर सहित पूरे बिहार के शिक्षक नई शिक्षा प्रणाली को बेहतर ढंग से अपनाने और छात्रों के लिए एक अधिक समृद्ध शैक्षणिक वातावरण बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

तमिलनाडु से प्रकाशित प्रथम हिन्दी दैनिक
दक्षिण DAKSHIN PRAKASH प्रकाश

बिहार दिवस के सफल आयोजन में शामिल पूर्वी चम्पारण के दो शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र

मोतिहारी। पटना के गांधी मैदान में बिहार दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय भव्य समारोह का आयोजन हुआ। समारोह के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए जिले के दो शिक्षकों को शिक्षा विभाग द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला के शिक्षक मृत्युंजय कुमार एवं नवसृजित प्राथमिक विद्यालय बेलाहीराम पूर्वी के प्रधान शिक्षक विनोद कुमार को यह प्रशस्ति पत्र राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद की संयुक्त निदेशक रश्मि प्रभा एवं आयोजन के नोडल शिव कुमार (फाउंडर, टीचर्स ऑफ बिहार) द्वारा प्रदान किया गया।

विदित हो कि 22 मार्च से गांधी मैदान, पटना में आयोजित बिहार दिवस समारोह में दोनो शिक्षक मॉडल स्कूल के साधनसेवी के रूप में प्रतिनियुक्त थे। दोनों के कार्य को निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा भी सराहा गया है। समारोह समापन के उपरांत शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ.एस सिद्धार्थ एवं राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के निदेशक सज्जन.आर द्वारा संयुक्त हस्ताक्षरित प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

DNE news express
खबर है तो छपेगा भी, चलेगा भी...
Mon, 31 Mar 2025 www.dnenewsexpress.com

किशनगंज की बेटी निधि चौधरी नेपाल में सम्मानित

पटना। किशनगंज जिले के पोठिया प्रखंड की बेटी निधि चौधरी को नेपाल में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। यह सम्मान नेपाल साहित्यिक संस्थान द्वारा प्रदान किया गया, जो उनकी उपलब्धियों और प्रयासों की सराहना का प्रतीक है। निधि चौधरी न केवल एक समर्पित शिक्षिका हैं, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी अमूल्य सेवाएं दे रही हैं। समारोह के दौरान निधि चौधरी ने कहा, "यह सम्मान मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। इससे मेरी जिम्मेदारी और बढ़ गई है, और मैं शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में और अधिक योगदान देने के लिए प्रेरित हुई हूं। मैं नेपाल साहित्यिक संस्थान की आभारी हूं, जिन्होंने मेरे कार्यों की सराहना की है।"

नेपाल में सम्मानित होते किशनगंज की निधि चौधरी

निधि चौधरी बिहार शिक्षा विभाग की बाल पत्रिका निपुण बालमंच की संपादक हैं।

निधि चौधरी बिहार शिक्षा विभाग की बाल पत्रिका निपुण बालमंच की संपादक हैं। इसके अलावा, टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित पत्रिका प्रज्ञानिका का भी संपादन कर रही हैं। उनके लेखन और शिक्षा संबंधी कार्यों ने बच्चों और शिक्षकों के बीच सकारात्मक प्रभाव डाला है। उनके शिक्षा और साहित्य में योगदान को पहले भी कई मंचों पर सराहा गया है। इससे पूर्व उन्हें बिहार दिवस के अवसर पर पटना के गांधी मैदान में एसीएस द्वारा हस्ताक्षरित प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया था।

निधि चौधरी की यह उपलब्धि बिहार के शिक्षा और साहित्य प्रेमियों के लिए भी एक प्रेरणा है।

निधि चौधरी की इस उपलब्धि से पोठिया प्रखंड और किशनगंज जिले के लोग बेहद उत्साहित हैं। क्षेत्र के लोगों ने उन्हें बधाई दी और गर्व व्यक्त किया कि जिले की बेटी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन किया है। उनकी इस सफलता से यह संदेश जाता है कि शिक्षा और साहित्य के प्रति समर्पण से बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। निधि चौधरी की यह उपलब्धि बिहार के शिक्षा और साहित्य प्रेमियों के लिए भी एक प्रेरणा है।

हिन्दुस्तान

उपलब्धि | अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ सहित अन्य अधिकारियों के हाथों दिया गया प्रशस्ति पत्र, चार में दो फारबिसगंज प्रखंड के तो एक जोकीहाट व सिकटी प्रखंड के

पटना में अररिया के चार शिक्षक-शिक्षिकाएं किये गये सम्मानित

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद की संयुक्त निदेशक रश्मि प्रभा के हाथों सम्मानित होते शिक्षक रंजेश कुमार।

शिक्षिका अनुप्रिया।

शिक्षिका मधु प्रिया

शिक्षक संजय कुमार।

शिक्षक रंजेश कुमार।

शिक्षकों को प्रशिक्षण देने से बढ़ेगी शिक्षा की गुणवत्ता : विकास वैभव

जासं, पटना : समय-समय पर शिक्षकों को प्रशिक्षण देने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा। यह समय की मांग है। शिक्षक जितना कुशल होगा, बच्चों का भविष्य उतना ही बेहतर होगा। ये बातें रविवार को आयोजित कार्यक्रम में आइपीएस विकास वैभव ने कहीं। कार्यक्रम का आयोजन चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन ने किया था। अतिथियों का स्वागत एसोसिएशन के अध्यक्ष श्मायल अहमद ने किया। मौके पर संत माइकल हाईस्कूल के प्राचार्य फादर क्रिस्टी सवारीराजन ने कहा कि शिक्षा निरंतर सीखने की प्रक्रिया है। यह कभी पूर्ण होने वाली नहीं है। विद्यार्थियों को हमेशा सीखने की कोशिश करनी चाहिए। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है। मौके पर संत जेवियर हाईस्कूल के प्राचार्य फादर डोमनिक ने कहा कि एक आदर्श शिक्षक ही राष्ट्र को विकास दिशा में ले जा सकता है। शिक्षकों को बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर देना चाहिए।

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

क्वालिटी एजुकेशन• सीबीएसई बोर्ड की तरह राज्य के सरकारी स्कूलों में भी एनसीईआरटी किताबें चलेंगी

नई शिक्षा नीति के तहत सरकारी स्कूलों के छह से आठ वर्ग के बच्चे पढ़ेंगे एनसीईआरटी की किताब

सीबीएसई के स्कूलों में भी पाठ्यपुस्तकों में बदलाव

मॉडल• इंसानों की तरह चलने के अलावा कर सकती है बात, आंखें व शरीर घुमाने में भी सक्षम है रोबोट

सूबे के सरकारी स्कूल में बना पहला ह्यूमनॉइड रोबोट लक्ष्मी बनाने में लगा दो महीने से ज्यादा समय, सीएम ने की सराहना

बिहार दिवस पर पटना में किया गया प्रदर्शित, हुई सराहना

पढ़ाई को आसान बना रहा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैनेजमेंट को कर रहा ईजी

एजुकेशन सिस्टम का बूस्टर बना एआई

बिहार के अपर मुख्य शिक्षा सचिव बच्चों के आमंत्रण पर पहुंचे बीहट मध्य विद्यालय

शिक्षा का कोई विकल्प नहीं, पढ़ेंगे तभी आगे बढ़ेंगे : एस. सिद्धार्थ

दीक्षांत समारोह

नौ सूत्री मांगों का एक स्मारपत्र भी सौंपा

मुख्यमंत्री ने बिहार दिवस समारोह का विधिवत शुभारंभ किया

बिहार को विकसित बनाने में भागीदार बनें : नीतीश

हम सब मिलकर बिहार के गौरव को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाएंगे

113 साल का हुआ बिहार

बिहार के विकास में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे : प्रधानमंत्री

रील्स के चक्कर में पलकें झपकाना तक भूल रहे लोग

सावधान : डॉक्टरों ने किया आगाह, आंखों में भेंगापन आने, ड्राई आई, मायोपिया का खतरा बढ़ा

विविध सुर्ख़ियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

कटिहार के दो शिक्षकों को बिहार दिवस के आयोजन को सफल बनाने केलिए मिला प्रशस्ति पत्र

मदरलैण्ड संवाददाता। (आज़मनगर) कटिहार

गांधी मैदान पटना में बिहार दिवस के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय भव्य समारोह का आयोजन हुआ।समारोह के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने केलिए कटिहार जिले के दो शिक्षकों को शिक्षा विभाग द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।उच्च माध्यमिक स्कूल मल्हरिया, समेली के प्रधानाध्यापक मृत्युंजयम एवं मध्य विद्यालय अरिहाना,आजमनगर के शिक्षक विप्लव कुमार को यह प्रशस्ति पत्र राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद की संयुक्त निदेशक रश्मि प्रभा,बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक निगम लिमिटेड के विशेष कार्य पदाधिकारी रमेश चंद्रा एवं आयोजन के नोडल शिव कुमार द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है।

विदित हो कि 22 मार्च से गांधी मैदान पटना में आयोजित बिहार दिवस समारोह में मृत्युंजयम पुस्तकों के जीवन चक्र पर आधारित स्टॉल पर भूमिका निभा रहे थे और विप्लव कुमार मॉडल स्कूल के खेल कक्ष में साधनसेवी के रूप में प्रतिनियुक्ति थे। दोनों के कार्य को निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना द्वारा भी सराहा गया है। समारोह के समापन उपरांत शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ एवं राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के निदेशक सज्जन आर द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। वहीं इस अवसर पर आयोजित टीएलएम मेले में शिक्षक प्रेम कुमार परदेशी ने भी स्वनिर्मित टीएलएम प्रस्तुत किया। राज्य स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में उच्च विद्यालय पदमपुर से बासकी कुमार को द्वितीय स्थान एवं पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय कोढा की छात्रा मोनालिसा कुमारी को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।दोनों छात्र छात्राओं को प्रमाणपत्र दिया गया।इस दौरान डाइट कटिहार के व्याख्याता गोपाल कुमार, मार्गदर्शक शिक्षक रामजयपाल सिंह यादव, लवली कुमारी भी मौजूद रहे।

अंतरिक्ष से भारत अद्भुत दिखता है, वहां जरूर जाऊंगी : सुनीता

अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने कहा, अपने पिता की जन्मभूमि जाकर वहां लोगों से मिलूंगी

न्यूयॉर्क। नासा की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने कहा है कि भारत अंतरिक्ष से अद्भुत दिखाई देता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि वह अपने पिता की जन्मभूमि जाएंगी और वहां के लोगों के साथ अंतरिक्ष खोज के बारे में अपने अनुभव साझा करेंगी।

भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स ने अपने साथी बुच विल्मोर के साथ स्पेसएक्स क्रू-9 मिशन के तहत पृथ्वी पर लौटने के बाद साझा प्रेसवार्ता में यह टिप्पणी की। दोनों नौ माह से अधिक समय तक अंतरिक्ष में फंसे रहे थे। जब एक संवाददाता ने सुनीता से पूछा कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आईएसएस) में रहने के दौरान [illegible]

विल्मोर के साथ सुनीता विलियम्स।

लखनऊ के शुभांशु शुक्ला की तारीफ

सुनीता विलियम्स ने एक्स-4 वाणिज्यिक अंतरिक्ष यात्री मिशन पर कहा, एक्सिओम मिशन पर जा रहे भारतीय नागरिक शानदार हैं। इस मिशन में भारत के मिशन पायलट शुभांशु शुक्ला शामिल होंगे। लखनऊ में जन्मे शुक्ला, 1984 में अंतरिक्ष में जाने वाले भारतीय वायुसेना के पूर्व अधिकारी राकेश शर्मा के बाद भारत के दूसरे अंतरिक्ष यात्री होंगे। सुनीता ने कहा, उनके पास वहां अपने देश का हीरो होगा। मुझे उम्मीद है कि मैं किसी समय उनसे मिल पाऊंगी।

भारत महान देश

अंतरिक्ष यात्री सुनीता ने कहा, भारत एक महान देश है, एक अद्भुत लोकतंत्र है, जो अंतरिक्ष के क्षेत्र में काम करने वाले देशों में अपना पैर जमा रहा है। हम इसका हिस्सा बनना और उनकी मदद करना पसंद करेंगे।

बिटकॉइन निवेशक ने ध्रुवीय रोमांच के लिए उड़ान खरीदी

केप केनावेरल। बिटकॉइन निवेशक चुन वांग ने अपने साथ 3 अन्य के लिए स्पेसएक्स की पूरी उड़ान खरीदी है। वह सोमवार रात उत्तरी-दक्षिणी ध्रुव के लिए निकले। दोनों ध्रुवों की तस्वीरें भी उन्होंने भेजीं। ऐसा 64 साल के मानव अंतरिक्ष उड़ान के इतिहास में पहली बार हुआ है। वांग ने यह नहीं बताया कि साढ़े तीन दिन की यात्रा के लिए उन्होंने कितनी रकम दी। एजेंसी

वहां से भारत कैसा दिखता था और अंतरिक्ष खोज पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ उनके सहयोग की कोई संभावना है? इस पर उन्होंने कहा, भारत अद्भुत है। हम जब भी हिमालय के ऊपर से गुजरे तो बुच ने अविश्वसनीय तस्वीरें भी लीं। मुझे यकीन है कि मैं अपने पिता के देश (भारत) जाऊंगी और लोगों से मिलूंगी। एजेंसी

रचनात्मक शिक्षण सामग्री प्रदर्शन के लिए टीएलएम बेहतर मंच

शहर के आरएसबी इंटर विद्यालय में जिला स्तरीय टीएलएम मेला का हुआ आयोजन, शिक्षकों ने प्रदर्शित की बेहतर शिक्षण सामग्री

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : शहर के आरएसबी इंटर विद्यालय में जिला स्तरीय टीएलएम मेला 2.0 बुधवार को आयोजित हुई। बिहार शिक्षा परियोजना समस्तीपुर के द्वारा निपुण बिहार मिशन के तहत राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना एवं राज्य एफएलएन नोडल पदाधिकारी सह निदेशक प्राथमिक शिक्षा के निर्देशानुसार प्रारंभिक विद्यालयों में पाठ्य-पुस्तकों के अधिगम प्रतिफलों, पाठों के साथ संरेखित करने हेतु कार्यक्रम हुई। मेला में सभी प्रखंडों से हिंदी, अंग्रेजी, गणित, पर्यावरण विज्ञान एवं उर्दू विषयों से प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले शिक्षक व शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (प्राथमिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान) मानवेंद्र कुमार राय, टीई कोऑर्डिनेटर सह संभाग प्रभारी अर्जुन कुमार, सीटीई समस्तीपुर की वरीय व्याख्याता डा. अंजली कुमारी, डायट पूसा के वरीय व्याख्याता रिजवान अंसारी, पीटीईसी पटोरी के व्याख्याता शिवचन्द्र राय, पीटीईसी रामपुर जलालपुर के व्याख्याता अर्चना कुमारी, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी विभान मनोज कुमार मिश्रा, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी शिवाजीनगर रामजन्म सिंह, आरएसबी इंटर विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मनोज कुमार झा, कार्यक्रम सहायक मो. शफीक ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागी शिक्षकों को संबोधित करते हुए जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (प्राथमिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान) मानवेंद्र कुमार राय ने कहा कि टीएलएम मेला 2.0 एक ऐसा मंच है जहां शिक्षक अपनी रचनात्मक शिक्षण सामग्री प्रदर्शित करते हैं। जिससे बच्चों को खेल और गतिविधियों के माध्यम से विषयों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है तथा शिक्षकों को अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि टीएलएम का उपयोग कक्षाओं में छात्रों की सीखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। एक शिक्षक इसका उपयोग शिक्षण-अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए करता है। टीएलएम कक्षा में पढ़ाने और सीखने के बाद सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में भी मदद करते हैं। प्रतियोगिता में उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगसारा सरायरंजन के अध्यापक मनीष चन्द्र प्रसाद, उच्च माध्यमिक विद्यालय दिघरा पूसा के अध्यापक मुकेश कुमार मृदुल, आरएसबी इंटर स्कूल के शिक्षक निलय कुमार, परियोजना बालिका उच्च विद्यालय के अध्यापक मंगलेश कुमार, सुभाती कुमार सिंह ने मेला के सफल संचालन में सहयोग किया।

टीएलएम चयन में शामिल रहे लोग : कार्यक्रम में सभी प्रतिभागी शिक्षकों के द्वारा बनाए गए विषयवार टीएलएम का मूल्यांकन सीटीई समस्तीपुर की वरीय व्याख्याता डा. अंजली कुमारी, डायट पूसा के वरीय व्याख्याता रिजवान अंसारी, पीटीईसी पटोरी के व्याख्याता शिवचन्द्र राय, पीटीईसी रामपुर जलालपुर के व्याख्याता अर्चना कुमारी, प्रथम संस्था के जिला कार्डिनेटर सुधीर कुमार, क्षमतालय फाउण्डेशन से अभिषेक कुमार ने अवलोकन करते हुए विषयवार उत्कृष्ट टीएलएम का चयन किया।

27 मार्च को राज्यस्तरीय मेला में उत्कृष्ट टीएलएम बनाने वाले शिक्षक करेंगे प्रतिनिधित्व

- मेला में अंग्रेजी, हिंदी, गणित, उर्दू और पर्यावरण विज्ञान में बेहतर प्रदर्शन के लिए शिक्षक चयनित
- टीएलएम कक्षा में पढ़ाने और सीखने के बाद परिणामों को प्राप्त करने में भी करते मदद

टीएलएम मेला में शिक्षक ऋतुराज को पुरस्कृत करते डीपीओ एमके राय • जागरण

उत्कृष्ट टीएलएम बनानेवाले शिक्षक किए गए पुरस्कृत

अंग्रेजी विषय में उत्क्रमित मवि, मोहनपुर के ऋतुराज जायसवाल, हिंदी विषय में हसनपुर के प्रावि अनुसूचित जाति रामपुर रजवा की मंजू सहनी, गणित विषय में विभान के उत्क्रमित मवि सिरसिया के प्रवीण कुमार पंकज, पर्यावरण विज्ञान विषय में सिंघिया के राजकीय मवि तिलकौल की सुप्रिया मधु तथा उर्दू विषय में राजकीय उत्क्रमित मकतब चांदचौर रहीमपुर की आरजू आफरीन के टीएलएम का चयन उत्कृष्ट टीएलएम के रूप में किया गया। सभी शिक्षकों को जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मानवेंद्र कुमार राय ने प्रशस्ति-पत्र एवं मोमेंटो से सम्मानित किया। वहीं शेष सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र दिया गया। उत्कृष्ट टीएलएम बनाने वाले शिक्षकों को अब 27 मार्च को पटना में होने वाले राज्य स्तरीय टीएलएम मेला में समस्तीपुर जिला का प्रतिनिधित्व करेंगे।

आधार, जन्म प्रमाणपत्र नहीं तो होगा औपबंधिक दाखिला

जिन बच्चों के आधार नहीं, उनके अभिभावक के आधार पर नामांकन

प्रवेशोत्सव

[illegible]टना, कार्यालय संवाददाता। राज्य [illegible] सभी सरकारी प्राथमिक, प्रारंभिक [illegible]र उच्च विद्यालयों में सत्र 2025-26 [illegible] कक्षा एक में नामांकन के लिए बच्चे [illegible]ह्नित किए जा रहे हैं। स्कूल के पोषक [illegible]त्र में छह वर्ष की उम्र पूरी करने वाले [illegible]च्चों का नामांकन नजदीकी विद्यालय [illegible] पहली कक्षा में करवाया जाएगा।

चिह्नित बच्चों में से जिन बच्चों के पास [illegible]आधार कार्ड नहीं हैं, उनका भी नामांकन [illegible]कूल में लिया जाएगा। वैसे बच्चों का [illegible]विद्यालय में औपबंधिक नामांकन होगा। [illegible]से बच्चों के बदले उनके अभिभावक [illegible] आधार कार्ड नामांकन के वक्त लिया [illegible]एगा। बच्चों को नामांकन के समय [illegible]ई समस्या नहीं होगी। नामांकन के बाद [illegible]बंधित विद्यालय के प्राचार्य के सहयोग [illegible] इन बच्चों का पहले जन्म प्रमाणपत्र [illegible]नवाया जाएगा, इसके बाद आधार [illegible]र्ड बनेगा।

जीविका दीदी, आंगनबाड़ी [illegible]विका को देनी है जानकारी : बच्चों को चिह्नित करने के कार्य के लगी जीविका दीदियां, आंगनबाड़ी सेविका, टोला सेवकों को घर-घर तक अभिभावकों को इस बात से जागरूक करना है कि नामांकन अभियान चल रहा है। अभिभावक बिना आधार कार्ड के ही फिलहाल बच्चे का नामांकन करा सकते हैं। नामांकन में कोई बाधा नहीं होगी।

स्कूल में नामांकित बच्चों को यूनिफॉर्म, एफएलएन-टीएलएम किट, बैग, आदि उपलब्ध कराए जाएंगे। इसके लिए नामांकित बच्चों का आंकड़ा ई-[illegible]

15 तक राज्यभर में चलाया जाएगा नामांकन अभियान

- नामांकन के बाद बच्चों का बनेगा जन्म प्रमाणपत्र, आधार
- नामांकित बच्चों का आंकड़ा ई-शिक्षा कोष पर होगा दर्ज

बच्चों के नामांकन का प्रमाणपत्र देंगे प्रधानाध्यापक

पटना। प्रारंभिक विद्यालयों (कक्षा एक से आठ) के सभी प्रधानाध्यापक और संबंधित प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी (बीईओ) 15 अप्रैल को यह प्रमाणपत्र देंगे कि उनके क्षेत्र के छह वर्ष तक के सभी बच्चों का नामांकन करा दिया गया है। कोई बच्चा अनामांकित नहीं है। इसको लेकर शिक्षा विभाग ने जिलों को निर्देश जारी किया है। 15 अप्रैल तक राज्यभर में चलाये जाने वाले नामांकन अभियान की समीक्षा बुधवार को प्राथमिक शिक्षा निदेशक साहिला ने की। उन्होंने पदाधिकारियों को निर्देश दिया है कि छह वर्ष से अधिक उम्र के वैसे बच्चे जो अभी तक अनामांकित हैं, उनका नामांकन विद्यालय में उम्र सापेक्ष वर्ग कक्षा में कराया जाये।

सरकारी स्कूलों में दाखिले को शुरू हुआ 'प्रवेशोत्सव'

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य के सरकारी स्कूलों में दाखिले का अभियान शुरू हो गया है। शिक्षा विभाग द्वारा शुरू किये गये एक पखवाड़े तक चलने वाले नामांकन अभियान का नाम 'प्रवेशोत्सव, 2025' दिया गया है।

प्रवेशोत्सव 15 अप्रैल तक चलेगा। इसके तहत सौ फीसदी नामांकन का लक्ष्य रखा गया है। सौ फीसदी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा विभाग ने यह नारा दिया है- सब पढ़ें सब बढ़ें, 100 प्रतिशत नामांकन की ओर कदम बढ़ायें। प्रवेशोत्सव के तहत शिक्षा विभाग ने एक और नारा दिया है- मेरा विद्यालय मेरा अधिकार! शिक्षा का अवसर सबके लिए समान!!

प्रवेशोत्सव के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षा विभाग ने सोशल मीडिया में भी कैम्पेन चलाया है। सोशल मीडिया में चलाये गये कैम्पेन में प्रवेशोत्सव, 2025 का पोस्टर दिया गया है। साथ ही यह भी लिखा गया है कि प्रवेशोत्सव 2025-शिक्षा की ओर एक कदम! यह कैम्पेन सोशल मीडिया के जिन प्लेटफॉर्मों पर चलाया गया है, उनमें फेसबुक, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम एवं यूट्यूब शामिल हैं।

आपको याद दिला दूं कि शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस. सिद्धार्थ द्वारा 1ली से 8वीं कक्षा के सभी सरकारी स्कूलों के प्रधानाध्यापकों को सोमवार को लिखे गये पत्र के मुताबिक सभी प्रधानाध्यापक अपने-अपने विद्यालय के पोषक क्षेत्र में मुखिया के स्तर पर, वार्ड सदस्य के स्तर पर एवं जीविका के स्तर पर बैठक कर पोषक क्षेत्र के सभी बच्चों का पहली कक्षा में नामांकन करायेंगे। प्रधानाध्यापकों पर यह दायित्व भी सौंपा गया है कि कोई भी बच्चा नामांकन से नहीं छूटे।

प्रदेश में प्रारंभिक स्कूलों की संख्या तकरीबन 71 हजार है। इनमें तकरीबन 42 हजार प्राथमिक विद्यालय हैं, जिनमें 1ली से 5वीं कक्षा तक की पढ़ाई होती है। बाकी 29 हजार मध्य विद्यालय हैं, जिनमें 1ली से 8वीं कक्षा तक की पढ़ाई होती है। इसी प्रकार 9वीं से 12वीं कक्षा तक की पढ़ाई [illegible] तकरीबन 9,360 उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं। इसके साथ ही 9वीं एवं 10वीं की पढ़ाई वाले विद्यालय भी हैं।

सभी 71 हजार प्रारंभिक स्कूलों में 1ली कक्षा में प्रवेशोत्सव के तहत बच्चों का दाखिला लिया जाना है। 5वीं तक की पढ़ाई वाले तकरीबन 42 हजार प्राथमिक विद्यालयों से 5वीं तक की पढ़ाई पूरी कर 5वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा पास करने वाले लाखों बच्चों का दाखिला मध्य विद्यालयों में 6ठी कक्षा में होना है। इसी प्रकार मध्य विद्यालयों से 8वीं तक की पढ़ाई पूरी कर 8वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा पास करने वाले लाखों बच्चों का दाखिला 9वीं कक्षा में 10वीं तक की पढ़ाई वाले माध्यमिक या 12वीं तक की पढ़ाई वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों में होना है।

हेडमास्टर व बीईओ देंगे सर्टिफिकेट

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्यव्यापी नामांकन पखवाड़े की समाप्ति के बाद प्रधानाध्यापकों एवं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारियों को इस आशय के सर्टिफिकेट देने होंगे कि एक भी बच्चा अनामांकित नहीं है।

यह निर्णय नामांकन पखवाड़ा में तेजी लाने के लिए बुधवार को प्राथमिक शिक्षा निदेशक साहिला की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिया गया। विभिन्न विभागों से समन्वय स्थापित करने के लिए बैठक में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद एवं जीविका के प्रतिनिधि भी इसमें शामिल थे। तय हुआ कि समुदाय के सभी सदस्य मिलकर यह सुनिश्चित करें कि छह वर्ष तक के सभी बच्चों का नामांकन विद्यालय में हो जाए। छह वर्ष से अधिक उम्र के वैसे बच्चे जो अभी तक अनामांकित हैं, उनका नामांकन विद्यालय में उम्र सापेक्ष वर्ग कक्षा में कराया जायेगा। इन बच्चों को ब्रिज कोर्स करा उन्हें वर्ग सापेक्ष दक्षता प्राप्त करायी जायेगी। शिक्षा समिति की बैठक नियमित रूप से होगी। जीविका द्वारा ऑर्गेनाइज मुखिया सम्मेलन और महिला संवाद में प्रमुखता से भाग लेंगे और नामांकन अभियान का प्रचार प्रसार करेंगे। क्लस्टर और विलेज ऑर्गेनाइजेशन स्तर से नामांकन पखवाड़ा को सपोर्ट किया जायेगा। नामांकन पखवाड़ा से संबंधित अच्छे फोटोग्राफ और केस स्टडी को डॉक्युमेंटेशन होगा। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में घूमने वाले कचरा गाड़ी में निपुण सॉन्ग बजेंगे। एसएचजी स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के प्रमुख बिंदुओं को समाहित किया जायेगा। 15 अप्रैल को सभी प्रधानाध्यापक एवं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी एक प्रमाण पत्र देंगे, जिसमें स्पष्ट रूप से ये लिखा होगा कि हमारे पोषक क्षेत्र में अब कोई भी बच्चा अनामांकित नहीं है।

दो लाख भक्तों को वितरित किया जायेगा हनुमान चालिसा

बिहार दिवस पर बच्चों और शिक्षकों को मिला अनमोल उपहार!

बिहार दिवस समारोह में त्रैमासिक ई-बाल पत्रिका 'निपुण बालमंच' का हुआ भव्य विमोचन

संवाद संचार संवाददाता

पटना। बिहार दिवस के शुभ अवसर पर "अपन बिहार निपुण बिहार" स्टॉल पर त्रैमासिक ई-बाल पत्रिका "निपुण बालमंच" का भव्य शुभारंभ निदेशक प्राथमिक शिक्षा के द्वारा किया गया। यह पत्रिका पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध होगी।

"निपुण बालमंच", जो किशनगंज की शिक्षिका निधि चौधरी द्वारा संपादित और डिजाइन की गई है, बिहार के सरकारी विद्यालयों के बच्चों की कविताएँ, कहानियाँ, पेंटिंग्स सहित कई रचनात्मक अभिव्यक्तियों को मंच प्रदान करती है। इसके अलावा, बच्चों के लिए रोचक खेल, विज्ञान पहेलियाँ, [illegible] ज्ञानवर्धक तथ्य भी सम्मिलित किए गए हैं, जिससे उनकी सीखने की रुचि और रचनात्मकता को नई उड़ान मिलेगी।

पत्रिका के प्रधान संपादक उपनिदेशक संजय कुमार चौधरी हैं, जबकि संपादन एवं डिजाइन की जिम्मेदारी निधि चौधरी (शिक्षिका, किशनगंज) ने निभाई है। इसके पाठशोधक विनोद कुमार उपाध्याय (शिक्षक, जिला अरवल) हैं और विशेष सहयोग अनुपमा प्रियदर्शिनी (शिक्षिका, जिला सिवान) द्वारा दिया गया है। इस बाल पत्रिका की मार्गदर्शक एवं प्रेरणा के रूप में मृदुला कुमारी हैं।

उल्लेखनीय है कि शिक्षिका निधि चौधरी पहले से ही "टीचर्स ऑफ बिहार" की ई-मैगजीन 'प्रज्ञानिका' की संपादिका के रूप में कार्यरत हैं।

"निपुण बालमंच" न केवल बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेगा बल्कि उनके बौद्धिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

पत्रिका के विमोचन पर टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार ने पत्रिका के संपादक मंडल के सभी सदस्यों बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

उक्त जानकारी टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता अररिया जिले के शिक्षक रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक पूर्वी चंपारण जिले के शिक्षक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से दी है।

सादर आमंत्रण

सम्मानित महोदय/ महोदया,

Teachers of Bihar द्वारा आयोजित होने वाले

वार्षिकोत्सव-2025

में आपको आमंत्रित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।
आपकी गरिमामयी उपस्थिति हमारे लिए प्रेरणास्रोत बनकर हमारे प्रयासों को सार्थक दिशा प्रदान करेगी।

विषय :

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं शिक्षा में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी की भूमिका"

दिनांक- 13 अप्रैल 2025
समय - प्रातः 10:00 बजे से
स्थान- ए.एन. सिन्हा इंस्टिट्यूट, पटना

मुख्य अतिथि

डॉ. एस. सिद्धार्थ (भा.प्र.से.)
अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

विशिष्ट अतिथि

श्री अजय यादव (भा.प्र.से.)
सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

श्री सज्जन आर (भा.प्र.से.)
निदेशक, SCERT, बिहार

श्री विनायक मिश्रा (भा.प्र.से.)
निदेशक, पीएम पोषण योजना

श्रीमती साहिला (भा.प्र.से.)
निदेशक, प्राथमिक शिक्षा

निवेदक

Team, Teachers of Bihar -The Change Makers
www.teachersofbihar.org

संपर्क सूत्र- 7250818080

प्रज्ञानिका

www.teachersofbihar.org

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।

इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुंचा सकते हैं।

https://chat.whatsapp.com/Ko2ST5AI7ohGWj1v3Ff4On

हमसे जुड़ने के लिए उपर दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें

PRAGYANIKA
WhatsApp group